॥ श्री गोभ्यः नमः॥

हिन्दी मासिक

कामधेनु-कल्याण

जून-2012

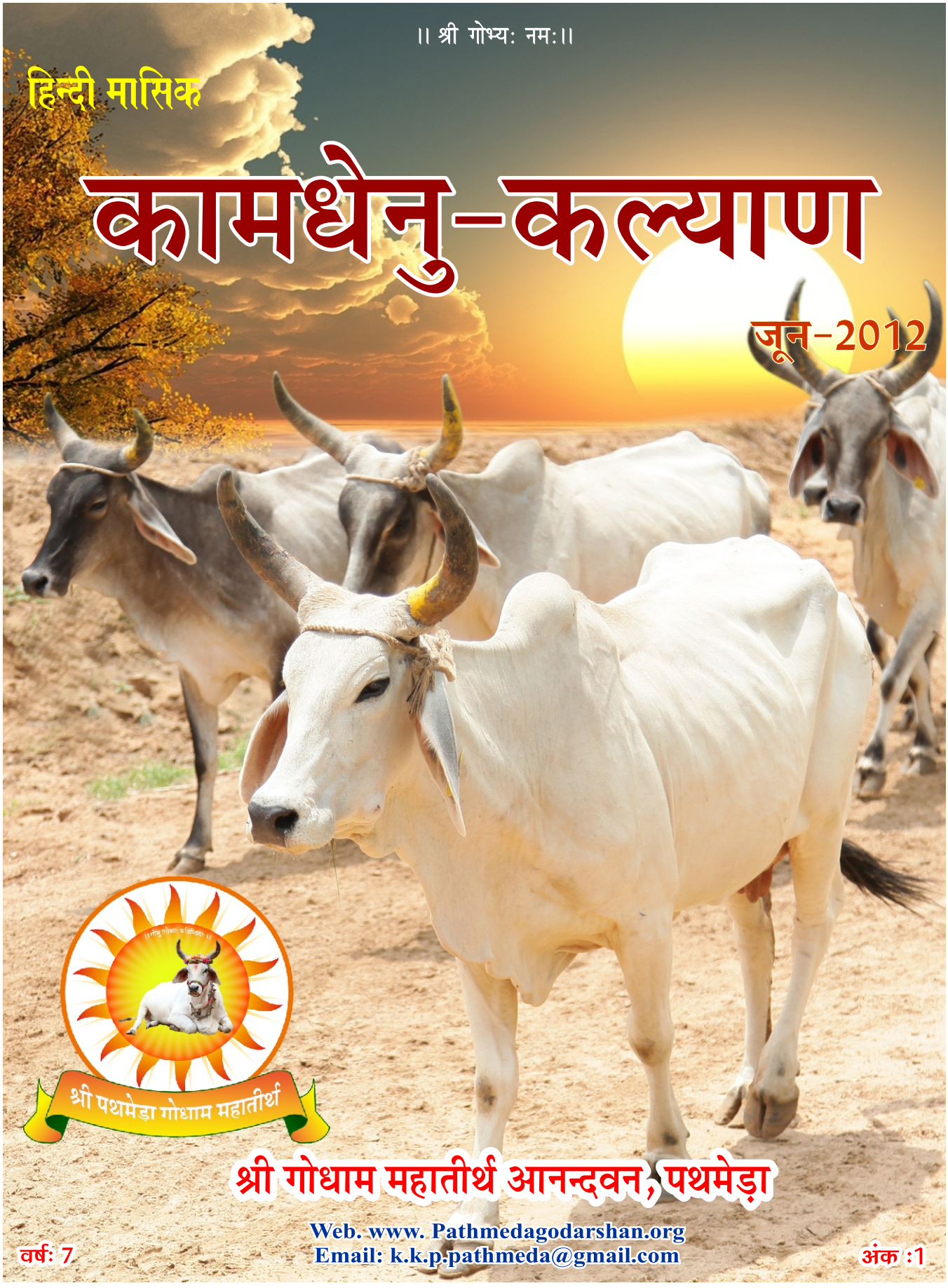

श्री पथमेड़ा गोधाम महातीर्थ

श्री गोधाम महातीर्थ आनन्दवन, पथमेड़ा

Web. www. Pathmedagodarshan.org
Email: k.k.p.pathmeda@gmail.com

वर्षः 7 अंक :1

सुरभी उवाच

प्रियपुत्रों,

स्नेह पूर्ण अनन्त शुभाशीष।

अपने जीवन में सेवा, साधना, सत्संग सदा प्राप्त करते रहो। पंचगव्य के प्रसाद से जीवन में आरोग्यता और सात्विकता पाते रहो !

प्रिय पुत्रों! परमात्मा द्वारा दिव्य सात्विकता व संस्कारों का उपहार प्रत्येक मनुष्य के लिए प्रस्तुत किया गया है लेकिन अपनी अर्थ प्रधान व्यस्त दिनचर्या में मनुष्यों का ध्यान इन दो उपहारों की तरफ नहीं जाता है और यह दो उपहार ही वास्तव में मनुष्य में मनुष्यत्व पैदा करते हैं। मैं माँ हूँ, मेरी यह प्रबल इच्छा है कि मेरे बच्चों को ये उपहार मिलें। मैं स्वयं इन उपहारों का वितरण करने में सक्षम हूँ पर अपनी वाणी से यह नहीं कह सकती बाकि अपनी ममतामयी आँखों से, अपने गव्यों से, शास्त्रों के कथन से और संतों की वाणी से संकेत करवाती हूँ कि हे मनुष्यों! मेरे पास आओ इन दो उपहारों को ले जाओ। जो मनुष्य यह संकेत समझ जाते हैं वे मेरी सेवा और सानिध्य से दिव्य उपहार प्राप्त कर लेते हैं पर अनेक लोग हैं जो व्यर्थ की लौकिक इच्छाओं के अधीन होकर झूठे सुख में उलझते रहते है। उन्हें मैं कैसे समझाऊँ ?

हाँ मेरे कुछ प्यारे पुत्र संत रूप से भी ऐसे जीवों को जगाने का काम कर रहे हैं। यद्यपि कलियुग अपने प्रभाव से बहुत बाधा पैदा करता है पर उनके पास जो शक्ति है, जो सामर्थ्य है वह उसका उपयोग करे, लेकिन भगवद् विश्वास की और सात्विकता की शक्ति जिसके पास है उसका कलियुग कुछ नहीं बिगाड़ सकता और मैं माँ होने के नाते मेरे पुत्रों में भगवद् विश्वास और सात्विकता की वृद्धि करूँगी और उनको मैं निश्चित ही प्रभु कृपा का पात्र बनाऊँगी।

बेटों! तुम्हारी पुत्र-पुत्रियाँ मेरी महिमा को समझ रहे हैं अब वे मेरे गोवत्स बनकर समाज में सात्विकता और संस्कार सिंचन करेंगे। मेरी महिमा का गान अब उनके द्वारा होगा। मैं इन्तजार कर रही हूँ ऐसे बालकों का। मेरा गोपाल संतों की सद् इच्छा पूरी करेगा। तुम मेरे धाम में आते रहो, जहाँ भी रहो सेवा करते रहो और निश्चिन्त होकर रहो, मैं सदा तुम्हारे साथ हूँ।

तुम्हारी माँ सुरभी

।। वन्दे धेनुमातरम् ।।

यया सर्वमिदं व्याप्तं जगत् स्थावरजंगमम्। तां धेनुं शिरसा वन्दे भूतभव्यस्य मातरम्।।

वर्षः7 **dke/ku&dY;k.k** अंकः1

वि.सं. आषाढ़ कृष्ण पक्ष 2069 जून – 2012

अनुक्रमणिका

1. सम्पादकीय 2

2. साधक संजिवनी ❖ स्मरण सम्बन्धी मार्मिक बात–1 4

3 श्रीकामधेनु कृपा प्रसाद ❖ परम भागवत **गोऋषि स्वामी श्रीदत्तशरणानन्दजी** महाराज के प्रवचन 5

4. गोभागवत कथा–2010 ❖ परम पूज्य द्वाराचार्य **श्रीमंहत श्रीराजेन्द्रदासजी** महाराज 10

5. बालक अंक ❖ बालोपयोगी दिनचर्या 15

6. कामधेनु (कहानी) 18

7. गोमाता की दारूण कविता 21

8. दानमहिमा अंक ❖ दान–एक विहंगम दृष्टि 23

9. एक गोसेवक ❖ गाँवों के अनाश्रित गोवंश की स्थिति और प्रबन्धन 26

10. संस्था समाचार ❖ परम श्रद्धेय गोऋषि श्रीस्वामीजी महाराज के मई माह के प्रवास का संक्षिप्त विवरणः–❖गोसेवार्थ दिव्य एवं भव्य स्वरूप में नून में ''गोभागवत कथा व नानी बाई रो मायरो'' । ❖ भीलवाड़ा में गोसेवार्थ ''नानी बाई रो मायरो'' अभूतपूर्व भव्यता–दिव्यता के साथ सम्पन्न। ❖ पालड़ी में श्रीभागवत कथा ज्ञानयज्ञ ❖ 20 से 24 जून 2012 को श्री मनोरमा गोलोक तीर्थ नन्दगावं में ''गो–वत्स पाठशाला '' ।❖23 मई को वरिष्ठ गोभक्तों–गोसेवकों की विशेष बैठक।

11. गोशाला कविता 34

धर्मानभिज्ञाः कलिकूटबद्धाः कामार्थलुब्धा विषयेषु लीनाः।
जानन्ति नो कामदुघाविभूतिम् धन्यास्तु ते गोकुल रक्षणोद्यमाः।।

आज के धर्म को न मानने वाले, कलियुग के कपट में बंधे हुए, अर्थ और काम के लोभी विषयी भोगी, इस कामदुधा गोमाता की विभूति को नहीं जानते। धन्य है वे लोग जो गोओं की रक्षा में लगे हुए हैं।

संस्थापक एवं प्रधान संरक्षक : गोऋषि स्वामी श्रीदत्तशरणानन्दजी महाराज

Web. www.pathmedagodarshan.org

Email : k.k.p.pathmeda@gmail.com

lEikndh; irk

श्रीगोधाम महातीर्थ आनन्दवन–पथमेड़ा,
त.–सांचोर, जि.–जालोर (राज.) 343041
Ph.02979-287102-09
Tel. Fax. 02979-287122

प्रबन्ध व कार्यकारी सम्पादक
पूनम राजपुरोहित ''मानवताधर्मी''
Mob.9414154706

lEiknd
स्वामी ज्ञानानन्द

eY;&10 #i;s

आजीवन सदस्यता शुल्क–1100 रुपये मात्र

स्मरण-सम्बन्धी विशेष बात

साभारः- साधक संजीवनी

स्मरण तीन तरह का होता है- बोधजन्य, सम्बन्धजन्य और क्रियाजन्य। बोधजन्य स्मरणका कभी अभाव नहीं होता। जबतक सम्बन्धको न छोड़ें, तबतक सम्बन्धजन्य स्मरण बना रहता है। क्रियाजन्य स्मरण निरन्तर नहीं रहता। इन तीनों प्रकारके स्मरणका विस्तार इस तरह से है-

(१) बोधजन्य स्मरण- अपना जो होनापन है, उसको याद नहीं करना पड़ता, परन्तु शरीरके साथ जो एकता मान ली है, वह भूल है। बोध होनेपर वह भूल मिट जाती है, फिर अपना होनापन स्वतःसिद्ध रहता है। गीतामें भगवान्‌के वचन हैं- 'तू, मैं और ये राजा लोग पहले नहीं थे, यह बात भी नहीं है और भविष्यमें नहीं रहेंगे, यह बात भी नहीं है अर्थात् निश्चित ही पहले थे और निश्चित ही पीछे रहेंगे। 'जो पहले सर्ग-महासर्ग और प्रलय- महाप्रलयमें था, वही यह प्राणीसमुदाय उत्पन्न हो-होकर नष्ट होता है। इसमें 'वही यह प्राणीसमुदाय' तो परमात्माका अंश है और 'उत्पन्न हो-होकर नष्ट होनेवाला' शरीर है। अगर नष्ट होनेवाले भागका विवेकपूर्वक सर्वथा त्याग कर दें तो अपने होनेपनका स्पष्ट बोध हो जाता है। यह बोधजन्य स्मरण नित्य-निरन्तर बना रहता है, कभी नष्ट नहीं होता; क्योंकि यह स्मरण अपने नित्य स्वरूपका है।

(२) सम्बन्धजन्य स्मरण- जिसको हम स्वयं मान लेते हैं, वह सम्बन्धजन्य स्मरण है, जैसे 'शरीर हमारा है, संसार हमारा है' आदि। यह माना हुआ सम्बन्ध तबतक नहीं मिटता, जबतक हम 'यह हमारा नहीं है' ऐसा नहीं मान लेते। परन्तु भगवान् वास्तवमें हमारे हैं; हम मानें तो हमारे हैं; नहीं मानें तो हमारे हैं, जानें तो हमारे हैं, नहीं जानें तो हमारे हैं, हमारे दीखें तो हमारे हैं, हमारे नहीं दीखें तो हमारे हैं। हम सब उनके अंश हैं और वे अंशी है। हम उनसे अलग नहीं हो सकते और वे हमसे अलग नहीं हो सकते। जबतक हम शरीर-संसारके साथ अपना सम्बन्ध मानते हैं, तबतक भगवान्‌का यह वास्तविक सम्बन्ध ा स्पष्ट नहीं होता। जब हम शरीर और संसारके सम्बन्धका अत्यन्त अभाव स्वीकार कर लेते हैं, तब भगवान्‌का नित्य-सम्बन्ध स्वतः जाग्रत् हो जाता है। फिर भगवान्‌का स्मरण नित्य-निरन्तर बना रहता है।

(३)क्रियाजन्य स्मरण-क्रियाजन्य स्मरण अभ्यासजन्य होता है। जैसे स्त्रियाँ सिरपर जलका घड़ा रखकर चलती हैं तो अपने दोनों हाथोंको खुला रखती है और दूसरी स्त्रियोंके साथ बातें भी करती रहती है; परन्तु सिरपर रखे घड़ेकी सावधानी निरन्तर रहती है। नट रस्सेपर चलते हुए गाता भी है, बोलता भी है, पर रस्सेका ध्यान निरन्तर रहता है। ड्राइवर मोटर चलाता है, हाथ से गियर बदलता है, हैण्डल घुमाता है और मालिकसे बातचीत भी करता है, पर रास्तेका ध्यान निरन्तर रहता है। ऐसे ही सम्पूर्ण क्रियाओंमें भगवान् को निरन्तर याद रखना अभ्यासजन्य स्मरण है।

इस अभ्यासजन्य स्मरणके भी तीन प्रकार हैं-

(क) संसारका कार्य करते हुए भगवान्‌को याद रखना- इसमें सांसारिक कार्यकी मुख्यता और भगवान्‌के स्मरणकी गौणता रहती है। अतः इसमें यह भाव रहता है कि संसारका काम बिगड़े नहीं, ठीक तरहसे होता रहे और साथ-साथ भगवान्‌का स्मरण भी होता रहे।

(ख) भगवान्‌को याद रखते हुए संसारका कार्य करना- इसमें भगवान्‌के स्मरणकी मुख्यता और सांसारिक कार्यकी गौणता रहती है। इसलिये इसमें भगवान्‌के स्मरणकी भूल नहीं होती।

(ग) कार्य को भगवान का ही समझना- इसमें काम-धंधा करते हुए भी एक विलक्षण आनन्द रहता है कि 'मेरा अहोभाग्य है कि मैं भगवान का ही काम करता हूँ, भगवान की सेवा करता हूँ!' अतः इसमें भगवान की स्मृति हरदम और विशेषता से बनी रहती है।

श्री कामधेनु कृपा प्रसाद

(टेपांकित वाणी का संकलन)

(गोऋषि परम श्रद्धेय स्वामी श्रीदत्तशरणानन्दजी महाराज)

.....पिछले अंक से आगे

जमदग्नि की पत्नि और राजा सहस्त्र बाहु अर्जुन की पत्नि दोनों बहिनें थी। एक दिन राजा सहस्त्र बाहु जमदग्नि के आश्रम के पास से गुजर रहे थे तो परशुरामजी की माता श्रीरेणुकाजी ने जमदग्नि ऋषि को कहा कि मेरे जीजाजी अपनी सेना के साथ कहीं जा रहे हैं। तो महाराज मेरे जीजाजी और उनके साथ सेवकों का स्वागत होना चाहिए। अपने पास गायें हैं जितना चाहेंगे उतना गोरस देगी। परशुराम जी के पिताजी ने कहा कि ये राजा लोग हैं, गो के ऊपर कुलेटी मार सकते हैं। बोले नहीं उनको निमंत्रण देना चाहिए। फिर उनको निमंत्रण दिया। सबको भोजन कराया। खीर, बहुत सारे दूध पाक बने वो बोले इतना सारा दूध कहाँ से आ रहा है। यह बात क्या है? पाकवान को पूछा- यह दूध कहाँ से आता है? बोले सामने वाले छप्पर में से आता है। बोले छप्परा तो बहुत छोटा है। राजा बोले देखा जाये क्या है उसमें। देखा तो एक गाय। आपको आश्चर्य होगा आप हम लोग अभी बात सुन रहे हैं। जो लोग हमारी संस्कृति और इस परम्परा का विरोध करते हैं या पाश्चाती लोग, वो लोग अगर सुनेंगे तो कहेंगे कि यह तो मजाक है। ऐसा हो सकता है क्या? हाँ हो सकता है, आज भी हो सकता है। देखिये आप नोट करिये-१० हजार गायें दूध देने वाली आप तैयार कर सकते है उनका दूध निकाल कर १ हजार गायों को पीला दो और १ हजार गाायों का दूध दोहकर १०० गायों को पीला दो और तीसरे वर्ष १०० गायों का दूध दोहकर के १० गायों को पीला दो और दस गायों का दूध दोहकर के १ गाय को पीला दो। अब जो यह गाय है आपको मनोवाच्छित दूध देगी और उसका वंश भी उतना ही दूध देगा।

इतना तो आज भी हो सकता है कोई सरकार, कोई सेठ करके देखे इच्छा हो तो। दूसरा, हमारी जो गाय १०-१२ लीटर दूध दे रही थी अभी थोड़े वर्षों पहले लेकिन अब ३ लीटर पर आ गई हैं। उनका दूध बढ़ाना हो तो वो भी हम कर सकते हैं, आराम से कर सकते है। अगर ३ लीटर दूध देने वाली गाय आपके घर में है उस गाय का आधा दूध बछड़े को पिला दीजिए और आधा दूध गाय को पिला दीजिए। पूरे साल तक पिला दीजिए। दूसरे साल बियाते ही यही गाय तीन लीटर की जगह ६ लीटर दूध देगी ५ लीटर देने वाली १० लीटर देगी। ६ लीटर वाली गाय को फिर से दूध पीला दो तो यही गाय आपको तीसरी बार बीयाते ही १० लीटर दूध देने लगेगी। दो साल तक दूध पिलाने से ३ लीटर दूध देने वाली गाय १० लीटर दूध देगी। अब तो इनकी उपेक्षा हो गयी, दूध पीने को नहीं मिला, खाने को नहीं मिला, गाय बीयाती है तो उनको दूध पूरा नहीं पीने दे रहे हैं और बाद में जब दूध नहीं देती है तब उसको छोड़ देते हैं। उनकी उपेक्षा, उनके साथ आत्मीयता नहीं होने के कारण और उन्हें भूख-प्यास की व्याधि ा के कारण यह हमारी गाय और उसका वंश कमजोर, अशक्त और कम दूध देने वाला हुआ है। इन्हें वापिस ठीक किया जा सकता है। ठीक तरह से पोषण दिया जाये और इस तरह की एक दो युक्तियाँ साथ में ली जाये जो हमारे शास्त्रों में है, हमारा गोवंश १०-१२

लीटर दूध दे सकता है। ब्राजील के लोग हमारे यहाँ से 'गिर' गाय ले जाकर उत्तम नश्ल का गोवंश तैयार कर सकते हैं तो क्या हम लोग यहाँ तैयार नहीं कर सकते? गीर, कांकरेज को भी हम दो-तीन साल में तैयार कर सकते हैं। कांकरेज गाय २० से २८ लीटर तक दूध दे सकती है और गीर गाय २० से ४० लीटर तक दूध दे सकती है। ब्राजील के लोगों ने उसका दूध बढ़ाने के लिये जो तरीका आजमाया उसके बारे में हमने जो सुना वो भिन्न तरीका है। वो अप्राकृतिक तरीका है और वो हो सकता है आगे जाकर गोवंश को नुकशान पहुँचाये। वे लोग गाय को जो भोजन देते हैं वो मशीनों से उबालकर भोजन की मात्रा कुछ कम करके देते हैं। ऐसे वो दूध बढ़ाते हैं तो यह ठीक नहीं है।

जो गाय उपेक्षित हो गयी है, जो गाय भूख-प्यास से पीड़ित हो रही है अथवा जो गोवंश कसाईयों के हाथोंमें पड़ने की सम्भावना है उस निराश्रित गोवंश को तो संरक्षण देना है। गाय के प्राणों की रक्षा करने के लिए ऐसा करना है क्योंकि गो प्राण की रक्षा विश्व प्राण की रक्षा है। जैसे पहले हमने बात की कि गौप्राण इतना महान इतना पवित्र प्राण है जिसके द्वारा सारी सृष्टि पवित्र होती है, जीवनी शक्ति से युक्त होती है, सात्विक बनती है। मानव को एक अविनाशी जीवन प्राप्त कराने में गोमाता एक महान भूमिका निभाती है। जिससे हम लोग कह रहे थे अर्थ में, आरोग्य में, धर्म में और अध्यात्म में गाय का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। किसी व्यक्ति को आत्मा की प्राप्ति करनी है, परमात्मा की प्राप्ति करनी है, शरीर से असंग होना है तो उसे सबसे पहले अपने नाड़ियों की शुद्धि और फिर प्राणों की शुद्धि, रक्त की शुद्धि और उसके बाद उसे अन्तःकरण की शुद्धि करनी होगी। तो इनकी शुद्धि करनी अतिआवश्यक है। बाहर के खान-पान से हमारे शरीर में जो विष गया है, माँ-बाप से लेकर अभी तक हम जो बड़े हुए हैं उसमें जो कुछ भी जहर गया है हमारे शरीर में, उस जहर का जब तक शमन नहीं होगा तक शुद्धि, सात्विकता अन्तःकरण में आयेगी नहीं। जब तक ऐसा नहीं आयेगा तब तक सत्य की अनुभूति नहीं होगी। सत्य की उपलब्धि के लिए पहले सतोगुण का विकास मनुष्य के लिए आवश्यक है। तो अध्यात्म में गाय की बहुत बड़ी भूमिका है।

ईश्वर प्राप्ति में जितने साधन है उन सबमें सर्वोत्तम साधन गोसेवा है। क्यों? क्योंकि गाय की सेवा से अपने आप बुद्धि और हृदय में सात्विकता आ जाती है। दूसरे-दूसरे साधनों से तो साधक अपनी और से चलकर साध्य के पास जाता है और गोसेवा रूपी साधन से जो साध्य है वो चलकर साधक के पास आता है। दूसरे साधन से भक्त भगवान की और चलकर जाता है और गोसेवा रूपी साधन से भगवान भक्त के पास चलकर आते हैं। इतना यह महान साधन है और अध्यात्म में इसका इतना महत्वपूर्ण स्थान है।

आरोग्यमें इस काल के भंयकर से भंयकर रोग जैसे एड्स, टीबी, केन्सर आदि हैं, आज हम कह रहे हैं कि इनसे भी भंयकर कोई विष हो तो उस विष का शमन भी गाय के गव्यों से हो सकता है। उस पर अनुसंधान और परिष्करण अनिवार्य है, हो सकता है कि ऐसा कोई जहर नहीं जो पंचगव्य से न मिटे। अगर एक आदमी एक माह तक पंचगव्य का प्रयोग करे तो उसके साध्य-असाध्य जनक कोई भी बीमारी हो तो वो पंचगव्य के सेवन करने से ठीक हो सकती है। ये सारी बातें इतनी सत्य और प्रामणिक हैं।

पृथ्वी माँ, हमने कहा कि इनको गाय का गोबर और गोमूत्र मिले जिससे कि हम इतने वर्षों से पृथ्वी से जैसे उत्पादन ले रहे है वैसे

ही आगे भी लेते रहें। इससे हमारी पृथ्वी माँ नित्य नूतन बनी रहेगी और उनकी जीवन शक्ति नष्ट नहीं होगी। पर्यावरण की दृष्सि यह जितना जहर है उसका शमन भी गाय के गव्यों से, घी से हवन, दीप करने से और गाय के स्पर्श होकर चलने वाली पवन से होगा।

तो सज्जनों! बातें तो बहुत हैं। गाय! गाय की महिमा और गव्यों की उपयोगिता हम हजारों सालों तक गाते रहें तो भी पूरी नहीं हो सकती। यह तो आप सब जानते हैं, थोड़ा-थोड़ा कहने में भिन्न हो सकता है पर गाय का कितना उपकार है इस सृष्टि के ऊपर और गाय सृष्टि के लिए कितनी आवश्यक है। विशेषकर हिन्दू संस्कृति के लिए, भारत वर्ष के लिए गाय का कितना महत्वपूर्ण स्थान है। आप हम इस पर हजारों सालों तक विचार कर सकते हैं, प्रयोग कर सकते हैं, नित नये-नये लाभ मिलेंगे। जैसे गीता अथाह है, वैसे ही गाय भी अथाह है। गीता को गाने वाला गायक है वह भी हमें गोमाता की कृपा से ही प्राप्त हुआ है। गीता का ज्ञान गोमाता की कृपा से ही हमको प्राप्त हुआ है। हमारे यहाँ जितने ऋषि हुए हैं या जितने अवतार हुए हैं, जिन्हें हम महान पुरुष कहते हैं, जिनकी ऋतम्भरा प्रज्ञा जगी है, जो ब्रह्मतत्व को प्राप्त हुए, भगवत प्राप्त हुए हो, ज्ञान जिनको जीवन में हो चुका है, ऐसे महापुरुष और जिन्होंने मानव कल्याण के रहस्यमय साधन हमारे लिए एकदम सरल बना दिये हैं वे सारे-के-सारे हमें गोमाता की कृपा से ही प्राप्त हुए हैं। तुलसीदासजी कहते हैं ''इति विशाल सेतु जो नरप कराई'' विशाल पुल को राजा बनाता है। एक छोटी सी चींटी वह भी उस पुलके पार चली जाती है। ऐसे ही हमारे पूर्वजों ने मानव कल्याण के लिए ऐसे विशाल पुल बना रखे हैं, विशाल पथ बना रखे है। ऐसे पथ बनाने वाले महापुरुष और स्वयं परम पिता परमात्मा के अवतार वे सब इस पृथ्वी पर आये, उसके पीछे भी गोमाता की कृपा है। गोमाता की कृपा के अतिरिक्त आप अपने धर्मशास्त्रों में, प्राचीन इतिहास को देखीये और कोई कारण नहीं दिखता।

अभी कुछ भक्त संतों की बात कह रहे थे। संतों का संतत्व, योगियों का योग, ज्ञानियों का ज्ञान संसार में जो सत्य और सार चीज है और सतत्व से मिश्रित है वह सब कुछ गोमाता से प्राप्त हुआ है। यह परम सत्य है। जितने भी वृक्षों के बीज हैं वे सब हमें गाय के गोबर से ही उपलब्ध हुए हैं। मानव का सबसे पहला शिशु भी गोमाता से उत्पन्न हुआ, वेद वाणी गो से उत्पन्न हुई, गायत्री परिवार के प्रणव पण्डया पधारे थे तब चर्चा हुई कि यह जो गायत्री है यह वेद की माँ है और गायत्री की माँ गो है। गायत्री को हम वेदों की माँ कहते हैं ना, उसके बाद गाय है। अगर गाय नहीं होगी तो गायत्री कहाँ से होगी। गायत्री माने ऐसा शुद्ध मन्त्र, ऐसी शुद्धि शक्ति, सात्विक शक्ति जिनके द्वारा हम सत्य की ओर जा सकें वह सात्विक शक्ति हमें गोमाता से मिली।

गायत्री की उत्पत्ति गोमाता से होती है। इस सम्बन्ध में पुराणों में एक कथा आती है। एक बार ब्रह्माजी को यज्ञ करना था पृथ्वी पर। उन्होंने एक पुष्प फेंका और कहा कि यह जहाँ गिरेगा मैं वहीं जाकर यज्ञ करूँगा। पुष्प ढूढ़ते-ढूढ़ते उनको काफी देर हो गयी और पता लगा कि यज्ञ का मुहुर्त आ गया है। तो उन्होंने अतिशीघ्रता में सावित्रीजी को बुलाया कि यज्ञ करना है मुहुर्त आ गया है। सावित्री को बुलाने गये पर सावित्रीजी पहुँच नहीं सकी और यज्ञ का मुहुर्त आ गया सभी देवता पधार चुके थे तो फिर बोले कि अब क्या करें तो ऋषियों ने इन्द्र को सुझाव दिया कि ब्रह्माजी के

साथमें यज्ञ करने में सावित्रीजी की आवश्यकता है और सावित्रीजी है नहीं। सावित्री जैसी शुद्ध सती कहाँ मिले पृथ्वी पर। तो बोले ऐसा करो यह जो गूजरी जा रही है ना दूध बेचने इस गूजरी को पकड़कर गोमाता को सौंपदो गोमाता इसको पवित्र करके देदेंगी। उस गूजरी को गाय ने अपने ओधर में लिया और गोमय से निकाला और उसने फिर ब्रह्माजी के साथ बैठकर यज्ञ किया। उसी का नाम गायत्री देवी है। गायत्री की उत्पत्ति गोमाता से हुई। इस तरह से मैं जो आपको बातें कह रहा हूँ वे सारी शास्त्रों में लिखी हुई हैं।

तो निवेदन कर रहा था कि गाय धार्मिक दृष्टि से, अध्यात्मिक दृष्टि से और आर्थिक दृष्टि से सब दृष्टियों से मानव का और सृष्टि का हित ही करने वाली है। गाय के बिना इस सृष्टि के जीवन की कल्पना करना बहुत बड़ा धोखा है। क्यों? क्योंकि अब आप पृथ्वी से, वायु से, अग्नि से जिनसे जीवन शक्ति लेते हो, जैसे खेती में से निरन्तर खेती निकालने से भूमि की जीवनी शक्ति समाप्त होती है और उसको उर्वरा देनी पड़ती है। ऐसे ही समष्टि प्रकृति में, यह जो प्राणी रूपी फसलें निरन्तर निकलती रहती है तो समष्टि प्रकृति की भी जीवनी शक्ति समाप्त होती है। जैसे हमको भूख लगती है ऐसे ही यह जो चल रहा है ना पूरा ब्रह्माण्ड इसको भी भूख लगती है। उसको भी आहार की आवश्यकता होती है। यह गोमाता सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का आहार पूरा करती है। सब को पोषण देती है। हमने पहले बात की थी कि लोग अण्डा भी खाते हैं, रोटी भी खोते हैं, फल भी खाते हैं, आहार तो इनको मिल रहा है पर सारा जहरीला मिल रहा है। जहरीले आहार का क्या दुष्परिणाम होता है? जैसे हम लोग अफीम ही अफीम खायें और रोटी न खायें, या फिर अफीम से थोड़ा हल्का जहर खायें तो जल्दी से जल्दी यह शरीर रुग्ण होकर नष्ट हो जायेगा। यह नष्ट कितने दिन में होगा यह तो नहीं कह सकते। जैसे आपने अफीम खाया आज और दिनभर और कुछ नहीं खाया, दूसरे दिन फिर अफीम खाया। तो अफीम से आपको आने वाली ताजगी १० से १५ दिन रह सकती है। अगर आप अन्न, जल बिल्कुल नहीं लोगे तो आखिर आपको मरना ही पड़ेगा। इस तरह ब्रह्माण्ड को जहर मिल रहा है, पृथ्वी को जो जहर मिल रहा है, वनस्पति को जो जहर मिल रहा है, सूर्य को जो जहर मिल रहा है, वायु को जो जहर मिल रहा है तो ये जहर खा-खा कर जी रहे हैं। तो सोचो कैसे जियेंगे और कितने दिन जियेंगे? अग्नि में जैसे हम लकड़ी जलाते हैं और लकड़ी जलने के बाद उसका आकार बना रहता है पर लकड़ी में कोई जीवन नहीं रहता है, ऐसे ही यह पृथ्वी रहेगी, सूर्य भी रहेगा पर जीवन विहीन। इनमें जीवन नहीं रहेगा। वैज्ञानिक कहते हैं कि मंगल ग्रह पर गये थे पर वहाँ कोई जीवन है नहीं। तो भैया ऐसा ही होगा जैसा तुम करने जा रहे हो। ये जो हम नवग्रह कहते हैं ये पृथ्वी के नो खण्ड हैं। ये तीन-चार और मिलाकर १४ बनाये हैं। जब हम पृथ्वी माता कहते हैं, तो जहाँ-जहाँ ठोस आधार हैं चाहे वो ऊपर हैं या नीचे वह सब पृथ्वी का ही अंश है। पृथ्वी माता का अर्थ यह इतनी ही पृथ्वी नहीं है ऊपर का आप लोग जिन्हें ग्रह कह रहे हो वह भी पृथ्वी ही है। सारी पृथ्वी को दूषित करते-करते अब कोई एक दो भाग पृथ्वी का शुद्ध रहा है उसको भी दूषित कर रहे हैं। यह गोमाता उन सबको जीवन देती है, इन सबको पोषण देती है। जिससे उनका जीवन बना रहता है। जो उनमें से लेते हैं जो गाय के द्वारा पूर्ति हो जाती है। मानव जो इस पृथ्वी, प्रकृति से जो लेता है उसकी पूर्ति गो के

द्वारा हो जाती है। वैसे तो गाय को छोड़कर सारे के सारे प्राणी पृथ्वी से जो कुछ लेते हैं उसे बिगाड़कर छोड़ते है और गाय जितना लेती है उनको शुद्ध पवित्र अन्त शक्ति से युक्त बनाकर छोड़ती है। गाय खाती तो वही घास आदि खाती है जो मानव नहीं खा सकता और वह गोबर, दूध आदि बनाकर दे रही है। ये पदार्थ इतने महान, इतने अनन्य हैं कि हमें १०-२० साल बाद पता लगेगा। थोड़ा-थोड़ा तो पता लग रहा है कि गोबर और गोमूत्र मानव स्वास्थ्य के लिए, पर्यावरण के लिए बहुत लाभकारी है।

तो मैं निवेदन कर रहा था कि इसका उद्देश्य केवल गोशालाएँ खोलकर चन्दा लेकर बाड़ों में गायें रखना नहीं है। ये संरक्षण केन्द्र तो इसलिए खोले गये हैं कि इससे जन-जन को गाय की महत्ता, गाय की उपादेयता, गाय की आवश्यकता और गव्यों का उपयोग कैसे-कैसे किया जाये, गाय की हमारे लिये कितनी आवश्यकता है और गाय कितनी महत्वपूर्ण है, गायके होने से कितना लाभ होता है समाज को, राष्ट्र को और समष्टि प्रकृति को, इन सब बातों को समझाने के लिए और जीवन में धारण करने के लिए यह केन्द्र स्थापित किया गया है। गायों का दूध बढ़ायें, वृद्ध गायों की सेवा हो, अच्छे बैल तैयार किये जायें, गोबर-गोमूत्र, दूध, दही, घीसे होने वाले अनेक प्रकार के जो लाभ हैं उनका प्रकाशन इस संस्था के द्वारा हो, उनका उत्पादन हो और फिर वितरण हो, विनियोग हो, जन-जन को यहाँ से प्रशिक्षण मिले। गाय कैसे पाली जाये, गव्यों का कैसे विनियोग किया जाये और पृथ्वी को कैसे जैविक बनाया जाये, हमारे परिवार को, गांव को सभी को निरोग स्वस्थ कैसे बनाया जाये, हम बलशाली कैसे बने, हम बुद्धिशाली कैसे बने, हम सब परस्पर एक होकर अपने समाज का और अपने राष्ट्र का कैसे विकास करें इस हेतु के लिए यह केन्द्र खोला जाता है। इसी के माध्यम से हम सबको दिशा मिलेगी और गोमाता के चरणों में पुनः प्रार्थना करते हैं कि हम सभी को दया प्राप्त हो। अरे गाय पर हम क्या दया करेंगे? गाय हमारे पर दया करे। जब तक यह हमारी मानसिकता बनी रहेगी कि हम गाय पर अहसान कर रहे है, गोशाला खोलकर हम अहसान कर रहे हैं, चारा खिला रहे हैं तो हम अहसान कर रहे हैं तब तक तो भाई यह गाय अहसानों से दबती-दबती जमीन में जायेगी। गाय का हमारे उपर अहसान है और यह बात समझने के लिए इस तरह के गोसेवाश्रमों की आवश्यकता है। गाय ही हमारे ऊपर अहसान करती है वह हम प्रयोगशाला में सिद्ध करके बताये। अगर इस धैर्य से कार्य को करेंगे तो पूरे गुजरात को दिशा दे सकता है। अगर ऐसे ही खोल लेते कि चारा डालों दया आपने की है साधुओं को हिन्दुओं ने पाला ही है पर इस तरह से पाले हुए साधु और गाय आपके काम नहीं आयेंगे। आप लोग कहते हैं कि हमने महाराज का स्वागत किया, कुटिया बनाई अरे महाराज को क्या सिर फोड़ना कुटिया से। अगर जगत को इस शरीर की आवश्यकता है तो जगत इस शरीर की रक्षा अपने आप करेंगा। अगर आपके द्वारा जगत का हित नहीं हो रहा है, तो आप इस पृथ्वी पर बोझ हो। इसलिये यह शरीर सेवा के लिए है और गोसेवा से बढ़कर कोई बड़ी सेवा नहीं हो सकती। पूरी पृथ्वी पर पवित्र काम, पवित्र सेवा, पवित्र धर्म गो की रक्षा, गो का संवर्धन, गो की महता को जन-जन तक पहुँचना, गोपालन संस्कृति को पुनः स्थापित करें। गाय सबका कल्याण करने वाली है। इन्हीं शब्दों के साथ अपनी वाणी को गोमाता के चरणों में अर्पित करता हूँ।

जय गोमाता, जय गोपाल।

श्री गोभागवत कथा

कथा व्यास

परम पूज्य द्वाराचार्य महंत श्रीराजेन्द्रदासजी महाराज

.....पिछले अंक से आगे

कृषि किसके लिये! गोरक्षा के लिये। क्योंकि बिना कृषि के गाय की सेवा, गाय की रक्षा सम्भव नहीं है। क्योंकि दाना-पानी कैसे देंगे। तो गाय के लिए ही कृषि और गाय के लिए ही वाणिज्य। गाय को अंगी बना लें हम और अपने जीवन के जितने कार्य हैं, जितने कर्म हैं उन्हें अंग बना लें तो कोई कठिनाई नहीं है। अभी उद्घोषक कह रहे थे ना कि हमारा लक्ष्य है कि हम पाँच वर्ष में ऐसा वातावरण प्रस्तुत करेंगे। भगवान से प्रार्थना करते हैं कि हम तो क्या करेंगे, करने को तो ठाकुरजी है, पर विचार बहुत अच्छा है कि पाँच वर्ष में हम चाहते हैं कि सम्पूर्ण राष्ट्र में गोहत्या पर पूर्ण प्रतिबन्ध हो जाये। बहुत अच्छा विचार है। लेकिन आप विश्वास करें, जिस दिन भारतवर्ष का पवित्र आस्तिक समाज, भारतीयता में विश्वास रखने वाला समाज जिस दिन अंगी रूपमें गायको स्वीकार कर लेगा, अन्य अपने कर्तव्य कर्मोंको अंग रूपमें स्वीकार कर लेगा, उस दिन पाँच वर्षकी प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ेगी। अगर एक साथ स्वीकार कर ले तो पाँच वर्षका काम पाँच महिनेमें हो जायेंगा। हम समझते हैं कि पाँच महिने भी बड़ी बात हो जायेगी। सारा राष्ट्र एकबार अंगी रूपसे गाय को स्वीकार तो करें।

हम मुँह देखी बात नहीं कह रहे हैं। प्रत्यक्ष जो अनुभव में आ रहा है वह कह रहे हैं कि पथमेड़ा गोधाम ने परम श्रद्धेय पूज्य श्रीमहाराजजी के सन्निधि में अंगी भाव से गाय को स्वीकार किया। बाकि सब बातें अंग भाव से स्वीकार की। उसीका यह सुप्रति फल है जो इतने थोड़े समय में इतनी अच्छा उपलब्धि संस्था को प्राप्त हुई और अन्यत्र स्थिति क्या है, कि गाय की रक्षा, गाय की सेवा को हम अंग मानकर कर रहे हैं। चलो हमारा मुख्य काम तो यह है पर इसके साथ यह भी करो। तब फिर उस ट्रस्ट कमेटियों से जुड़े हुए लोग कहते हैं कि अरे बहुत महंगी है बहुत खर्च पड़ता है, क्या जरूरत है?, क्या आवश्यकता है? रहने दो बाजार से दूध खरीद लेंगे, बाजार का घी मंगवा लेंगे, मन्दिर का खर्च ५० हजार रूपये महिने का और गोशाला का खर्च १ लाख महिने का, कटाव गोशाला। तो गोशाला कहीं अंग बनकर रह जाती है हमारी धार्मिक संस्था का अंग भी नहीं रह जाती। अथवा दूध के लालच में, दूध देने वाले पशु को गाय के भ्रम से लोग पाल लेते हैं।

बड़ी हंसी भी आती है उन दुधारू पशुओं को वैतरणी पार करने के संकल्प से उनकी पूँछ पकड़कर गोदान भी कर देते हैं। पाठकजी ऐसी कोई विधि है जिसमें गोतत्व न हो उसकी पूँछ पकड़कर वैतरणी पार हो जाये। यह शंकर जाति का पशु है, जर्सी जिसे कहते हैं। इसका दान करने से कोई पुण्य है या फिर वो स्थिति आ जायेगी। अभी हम लोग गये थे पूज्य महाराजजी भी साथ में थे, उड़ीसा में बालेश्वर जनपथ में रेणुवा गांव है छीर चुरावाले महाराजजी। सृष्टि का सबसे पहला श्रीकृष्ण विग्रह। उसकी कथा आती है- भगवान श्रीरामजी चित्रकुट में विराज रहे थे श्रीजानकीजी के साथ। श्रीलक्ष्मणजी सेवा में उपस्थित थे उसी समय ग्वारीया गायों का झुण्ड लेकर वहाँ से निकला। गायें जा रही थी पीछे से गोपालक गायों का गोचरण करते हुए जा रहे थे। उस दृश्य को देखकर भगवान श्रीरामजी को इतनी प्रसन्नता हुई कि भगवान हंसने लगे। भगवान

को इतना प्रसन्न देखकर श्रीजानकीजी ने और श्रीलक्ष्मणजी ने भगवान से प्रार्थना की कि जय जय ! आज के जैसा खिला हुआ मुखारविन्द तो पूर्व में नहीं देखा गया। आज आप बहुत प्रसन्न हैं। आपकी प्रसन्नता का कारण क्या है? तो ठाकुरजी बोले इस गोवंश को देखकर, गोपालकों को देखकर हमारे चित्त में प्रसन्नता हो रही है। गोपालक और गोपालन को तो आपने बाल्यकाल से ही देखा है, आज विशेष प्रसन्नता का हेतु क्या है? तो भगवान ने कहा हम भी द्वापरान्त में नंदग्रह में ग्वारिया-गोपाल बनकर गोचारण करने वाले हैं। तो कृष्ण अवतार में गोचारण करेंगे, गोपालन करेंगे। उसकी स्मृति हमें आ गई इसीलिये हमको प्रसन्नता हो रही है कि हम उस समय गोचारण करेंगे तो कितने अच्छे लगेंगे।

अब तो श्रीकिशोरीजी ने प्रार्थना की जय जय ! आपका वह स्वरूप गोपालन करने वाला, गोचारण करने वाला कैसा होगा हम दर्शन करना चाहते हैं। बोले प्रतीक्षा करो। बोले हम तो अभी दर्शन करना चाहते हैं। परम कोटि श्रीराम ने कामन्द गिरी की एक शीला अपने अंग में पदराई और अपने तरकस से बाण निकालकर उस ब्रह्मशीला को खोदकर के श्रीठाकुरजी ने गोपीराजजी के विग्रह का निर्माण किया। इस रामजी के कर कमल से चित्रकुट के कांतानाथजी की शीला में निर्मित वह विग्रह है। जिसमें श्री ठाकुरजी को गोचारण करते हुए दिखाये गये हैं। नीचे गायें बनी हुई और भगवान के आठ सखा हैं और उसमें बोले कि हम रासलीला भी करेंगे। आठ सखा हैं, गायें हैं और अष्टसखी और कंस-चानुर वध वो भी दिखायेंगे। भगवान ने कहा कि व्रज का और गायों के गोष्ठ का नाश करने वाले का हम वध करेंगे। यह भी उसमें दिखाया गया है। बड़ा अद्‌भुत विग्रह है।

तो ठाकुरजी चित्रकुट में विराज रहे थे। गोपीनाथजी और भगवान श्रीराम वनवासकी अवधि में चित्रकुट से आगे जब प्रस्थान किए तो श्रीब्रह्माजी को भगवान ने आज्ञा दी थी कि इस दिन गोपीनाथ स्वरूप की आप नित्य पूजा किया करेंगे। कांतानाथ पर विराजमान उस विग्रह की पूजा नित्य श्रीब्रह्माजी महाराज किया करते थे। बाद में पुरी के महाराज कोणार्क ने सूर्य मन्दिर बनवाया। वे चित्रकुट गये और गोपीनाथजी के दर्शन किये, बड़े प्रभावित हुए। ब्रह्माजी ने उन्हें स्वप्नादेश दिया कि हम इनकी पूजा करते थे, अब भगवान की आज्ञा यह है कि इनको पुरी ले जाओ। वे पुरी लेकर आये तो भगवान पुरी नहीं गये। यहाँ रंगुनाथ क्षेत्र में गायों का बहुत पालन-पोषण होता था। गायों को जब ठाकुरजी ने देखा तो कहा कि हम तो यहीं रहेंगे। आज भी उस क्षेत्र में गोपालन खूब होता है। अब नस्ल विकृत हो रही है तो दुःख की बात है। तो वहाँ ठाकुरजी रंगुना में रूक गये। राजा ने बहुत बड़ी भूमि लगवाई और बहुत विशाल गोशाला निर्मित की थी। ठाकुरजी को गव्य पदार्थों का ही भोग लगता था।

अभी ज्यादा पुरानी बात नहीं है, कुछ वर्ष पूर्व हम गये थे वहाँ। पूरे ठाकुरजी के मन्दिर के चारों तरफ गोशाला है उसमें सब गायें देशी थी। इस बार हम गये तो देशी गायें तो दो-तीन ही दिखाई पड़ी बाकि सब जर्सी और उनकी संख्या भी काफी कम थी, तो हमने वहाँ जानकारी की। एक व्यक्ति बोले महाराजजी मन्दिर सरकारी हो गया, डी.एम इसका अध्यक्ष हो गया और अब यह विचार किया गया कि एक गोशाला में ज्यादा खर्च है, सरकारी संस्था इतना खर्च व्यय नहीं कर सकती। दूध भी देशी गाय कम देती है। इसलिये गायें बेच दी गयी। वहाँ के व्यक्ति ने तो ऐसा बताया कि बेची गई गायें मन्दिर की

गायें और वह ऐसी जगह गई जहाँ से फिर कभी वापिस नहीं आ सकती, वहाँ का वो शब्द उच्चारण करना भी हमारे लिए बहुत कष्टकारी है। ऐसे अनाधिकृत लोगों के पास चली गई, गोवधकारियों के पास में गायें चली गई। सुनकर भारी पीड़ा हुई।

आज यह स्थिति है, सरकार हमारे धर्मस्थलों पर गिद्ध दृष्टि तो रखती है। यहाँ बहुत जनता आती है और बहुत चढ़ावा आता है। बड़ी जमीन जायदाद है। मन्दिरों का सरकारीकरण तो हो जाता है, लेकिन मन्दिरों के सरकारीकरण के बाद वहाँ की मर्यादाएँ सुरक्षित नहीं रहती। आज औरछा क्षेत्र से बहुत लोग आये हैं, वे लोग भी जानते हैं कि जिस समय रामराजा सरकार ओरछा में विराजमान हुए रामराजा सरकार के नाम से ही उस स्टेट के जमाने की गोशाला थी। रामराजा सरकार गोशाला और हमने देखा तो नहीं पर हमने सुना है कि सवा मण कलाकंद का भोग ठाकुरजी की गोशाला से लगता था और ठाकुरजी की गोशाला इतनी बड़ी थी, इतनी विशाल थी कि ठाकुरजी के सम्पूर्ण राजभोग का खर्च दूध, दही, घी आदि का सब उसी से वहन होता था। आज उसका नामो निशान ही मिट गया। सरकारी मन्दिर है कलेक्टर उसका अध्यक्ष है और कितने अंश में मर्यादा का पालन हो रहा है हम नहीं कह सकते। अन्य लोगों के किसी धर्म स्थलों पर कब्जा करके तो देखें।

यह बहुत दुःखद् बात है और उसका मूल कारण हमारे समाज का विघटित होना, संगठित नहीं होना है। महाराजजी ने बहुत सुन्दर बात कही- बोले लक्ष्य एक होगा तो कार्य सिद्धि में विलम्ब नहीं होगा। जो भी कुछ बोला है सूत्रात्मक बोला है। आज सम्पूर्ण भारतवर्ष के जो राष्ट्रवादी, भारतीय सनातन धर्मी, आस्तिक गोभक्त मनुष्य हैं, प्रजा है वो सब केवल गाय की सेवा, गाय की रक्षा का लक्ष्य रखें तो बहुत बड़ी सफलता प्राप्त की जा सकती है पर गाय को हमें अपने केन्द्र बिन्दु पर रखना होगा। गाय को अंगी बनाना होगा और जितने काम हैं उनको अंग बनाना होगा।

प्रयत्न में लगे रहना चाहिए। भले ही कोई उसका परिणाम दिखे या ना दिखे पर सत प्रयास अवश्य करना चाहिए। आप लोगों ने नाम सुना है। श्रीदेवनायकाचार्यजी महाराज, करपात्रीजी महाराज के दक्षिण बाजू कहे जाते थे। हमारे पूज्य गुरुदेव अनन्तश्री सम्पन्न श्रीगणेशदासजी भक्तमालीजी महाराज और देवनायकाचार्यजी की आपस में बहुत प्रीती थी, करपात्रीजी की तो थी ही। उनकी बड़ी प्रीति थी। तो धर्मसंगवाले महाराजजी सुना रहे थे, बोले- एक बार देवनायकाचार्यजी ने करपात्रीजी के सामने प्रश्न रखा- बोले महाराज हम सब शास्त्र के शब्दों पर विश्वास रखने वाले हैं और हमारे जितने पुराण हैं, महाभारत आदि ग्रन्थ हैं वे सब बताते हैं कि कलिकाल में ऐसा होगा, ऐसा होगा तो युग के धर्म का वर्णन है उनके अनुरूप कार्य हो रहा है। जब यह होना ही है तो हम उसमें बाधक क्यों बनें, अपने राम, राम करें अपना जो कुछ बने जो कुछ करें और ऐसा प्रयत्न करें की इसी शरीर से हमारा मोक्ष हो जाये और फिर ना आना पड़े। आप भी सन्यासी माहात्मा हो, विरक्त संत हो। आप कोई के इस परपंच में पड़े हो। यदपि देवनायकाचार्यजी स्वामीजी की पीड़ा से पीड़ित थे। उनका विशेष सौभाग्य था इसलिए उन्होंने यह कहा। महाराज आपकी बात कोई सुनते तो हैं नहीं। आप दिन रात रोते हैं भारतीय संस्कृति की रक्षा करिये, गाय की रक्षा करिये, धर्म की रक्षा करिये, निरन्तर प्रयत्नशील हैं। जब युग धर्म है, ऐसा ही होना

है तो आप क्यों शांति भंग कर रहे हैं। तो करपात्रीजी प्रश्न सुनकर हंसे और बोले देवनायकाचार्यजी पहले हमारी एक कथा सुन लो उसके बाद में तुम कुछ कहना।

महाराज सुनायें? तो बाले कि एक बार की बात है, भादव का महिना था। नर्मदाजी में बड़ी बाढ़ आयी हुई थी, जल बहुत था और उस समय एक नाविक लोगों को पार कर रहा था। एक मला पार कर रहा था लोगों को। इस पार से उस पार। मना करने पर भी ज्यादा लोग नौका पर चढ़ गये। नाविक बेचारा क्या करे, ले जा रहा था। आगे बीच मझधार में नैया डगमगाई, सन्तुलन बिगड़ा और महाराज उसी समय एक और दुर्घटना घटी। उस नौका में छिद्र हो गया, पता नहीं कैसे हुआ। अब वो पानी इतना बढ़ने लगा नौका में अब सबके हाथ पाँव फूलने लगे। एक तो बीच मझधार में नाविक संभाल नहीं पा रहा है और नौका में पानी भर रहा है। लोगों ने अपने-अपने कपड़े उतारे किसीके पास कमंडल था, किसीके पास लोटा था, उस समय लोग बर्तन लेकर चलते थे। नाव से निकालने लगे पानी, पर जितना निकाले उतना ही उसमें पानी भरने लगा। अन्त में यह देख उस नाविक ने कि नौका किसी भी प्रकार से बच नहीं सकती, नौका तो डूबेगी। उसने कहा भैया अब हमारे बस की बात नहीं है जिसको जैसे अपने प्राणों की रक्षा करनी हो प्राण रक्षा कर लो। मैं तो गया, ऐसा कहकर वो मला कूद पड़ा नर्मदाजी में। इसलिए कूदा कि मैं तो तैरकर पार हो जाऊँ। उनको जल में तैरने का अभ्यास होता है। अब जब नाविक कूदा तो लोग इतने भयभीत हो गये कि जो थोड़ा भी तैरना जानते थे वे भी कूद गये। उनके कूदने से एक दिशा में जाने से नौका का संतुलन बिगड़ा और पूरी की पूरी नौका उलट गयी और सबके सब लोग उसमें डूबकर मर गये और एक भँवर के आवृत में पड़ गया वह नाविक, वो भी बच नहीं पाया उसकी भी मृत्यु हो गई।

सब मर गये और सबके-सब मर के यमलोक गये। यमराज के यहाँ एक धर्मसभा आयोजित की गई। इतने लोग नर्मदा के जल में डूबकर मरे हैं, इनके मरने का पाप किसके सिर पर मंढ़ा जायेगा। बहुत देर तक चर्चा हुई और अन्तमें उस चर्चा में निश्चिय किया गया कि इस नौका में सवार जितने लोग मरे हैं उनकी मृत्यु का पाप उस मला के सिर पर मंढ़ा गया। मला रोया और चिल्लाया कि यमराज की धर्म सभा में घोर अधर्म हो रहा है। मैंने किसी को नहीं मारा। मैंने तो बहुत प्रयत्न किया। मना करने पर भी ज्यादा लोग चढ़ गये और छिद्र हो गया था तो उसमें मेरा क्या दोष था। जब तक मेरे में बाहुबल था तब तक मैंने कोशिश की। अन्त में मैं अपने प्राण बचाने के लिए नर्मदा में कूद पड़ा। उसमें मेरा क्या दोष है। धर्मराज ने निर्णय लिया यह बात बिल्कुल ठीक थी। इस नौका में तुम्हारे सहित सब लोगों की मृत्यु का विधान इसी प्रकार से था। लेकिन इस नौका को खेने वाले केवट तुम थे। तुम्हारा कर्तव्य क्या था? कर्तव्य यह था कि तुम नौका की रक्षा करते-करते अपने प्राण विसर्जित करते तो इतने लोगों को बचाने का पुण्य तुम्हें प्राप्त होता। तुमने अपने कर्त्तव्य का पालन नहीं किया। इसलिए यह पाप तुम्हारे सिर पर मढ़ा जायेगा। तुम्हें इतने लोगों की हत्या का पाप लगेगा।

करपात्रजी बोले स्वामी देवनारायणाचार्यजी महाराज इस आस्था रूपी, धर्म रूपी नौका में सारा समाज आरूढ़ है। सनातन धर्मरूपी जहाज में सारा समाज आरूढ़ है। कलियुग के प्रचण्ड तूफान से नैया डगमगा रही है, उसमें छिद्र हो गये हैं, पानी भर रहा है पर ब्राह्मण, संत,

विद्वान, धार्मिक, आस्तिक, राष्ट्रवादी पुरुष वे इस नौका को खेने वाले हैं। उन्हें अन्तिम समय तक प्रयत्न करना चाहिये। समाज की सुरक्षा का, राष्ट्र की सुरक्षा का, गाय की रक्षा का, देश की रक्षा का अन्तिम क्षण तक प्रयत्न करना चाहिए। भले ही होना हो सो होवे पर वो जो गोरक्षा के प्रयत्न में मारे जायेंगे उनको गोरक्षा का पुण्य मिलेगा और गोवध को देखकर भी जो कहेंगे कि हम तो माला फेरेंगे, हम तपस्या करेंगे यह तो युग का धर्म है, हमारा इससे क्या प्रयोजन। इस प्रकार से जो बचना चाहेंगे उनको धर्मराज के घर जबाव तलब किया जायेगा। तुम महात्मा थे, तुम ब्राह्मण थे, तुम आस्तिक थे, तुम भारतीय थे, तुम्हारे सामने गोवध हो रहा था। तुमने उसका विरोध ा क्यों नहीं किया।

करपात्रजी बोले आचार्यजी हम लोग आस्तिक हैं, परलौक और पुनर्जन्म में विश्वास करते हैं, इसलिये हम और आप जब वहाँ जायेंगे परलौक में, तो वहाँ पूछेंगे भाई तुम ब्राह्मण, विद्वान, वैदज्ञ, शास्त्रज्ञ वहाँ थे, इतना भंयकर पाप हो रहा था तुमने कुछ भी नहीं कहा। हमारा दुर्भाग्य है कि इस भंयकर समय में हमारा जन्म हुआ, पर हम तो यह चाहते हैं कि भगवान के सामने हमें लज्जित न होना पड़े। हम गोरक्षा के, सनातन धर्म की रक्षा के प्रयत्न में अपनी आहुति दें। इसलिये आज कोई यह कहे कि हम बच जायेंगे इस पाप से तो बचा नहीं जा सकता। जिस वायुमण्डल में हम श्वास पर श्वास ले रहे हैं, उस वायुमण्डल में गोवध के परमाणु मिश्रित हैं। जो श्वास के माध्यम से हमारे भीतर जा रहे हैं। हम यह नहीं कह सकते कि हम गोवध के पाप से बचे हुए हैं। हाँ जीवन भर पूरी शक्ति लगाकर गोवध का विरोध करें और स्वयं गाय की सेवा करें, गाय की रक्षा करें और नित्य प्रति भगवान से हृदय से प्रार्थना करें- *हे नाथ! ऐसी कृपा करो सम्पूर्ण धरती पर गोवध का पूर्ण प्रतिबन्ध हो, गोवंश का आदर हो, सारी धरती गाय के गोबर-गोमूत्र से सिंचित हो जाये, गाय के दूध, दही, घी की नदियाँ प्रवाहित होने लग जाये। हे प्रभु ! गायें स्वस्थ और सुखी हो, पयस्विनी हो, ब्राह्मण वेदज्ञ हो, क्षत्रिय वीर हो, वेद के मंत्र में कामना की गई है, हमारे घोड़े तीव्रगामी हो, वृशभ भार ढ़ोने में समर्थ हो, हमारी स्त्रियाँ पतिव्रताएँ हो, हमारे ब्राह्मण ब्रह्म तत्व से सम्पन्न हो,* यह प्रार्थना की गई है।

आज गीता जयन्ति है भगवान ने गीता सुनाकर भी अर्जुन को युद्ध में प्रवृत किया। मानो भगवान ने सच्ची परिभाषा अहिंसा की प्रस्तुत की। धर्म की, गाय की, सज्जनों की हिंसा करने वालों को समाप्त करना भी अहिंसा है। बोले- हे महर्षि विश्वामित्र ! मैं गाय के हित के लिए और ब्राह्मण हित के लिए **''गोब्राह्मणहितार्थाय देशस्य च हिताय च। तव चैवाप्रमेयस्य वचनं कर्तुमुद्यतः।।''** तो हम निवेदन कर रहे थे। भगवान ने पहले गाय को लिया। गाय का हित होने से, रक्षा होने से ब्राह्मण की रक्षा होगी और जब गाय और ब्राह्मण की रक्षा हो जायेगी तब देश की रक्षा हो जायेगी पर आज हम उल्टा प्रयत्न कर रहे हैं। उल्टा नहीं सीधा प्रयत्न करो। पहले गाय की रक्षा फिर ब्राह्मण की रक्षा, अध्यात्म मार्ग के पतितों की रक्षा, ऋषि-मुनियों की रक्षा, महात्माओं के धर्म और सदाचार की सुरक्षा और इसके बाद देश तो अपने आप सुरक्षित हो जायेगा। *जिस देश की गाय और ब्राह्मण निर्भय हो जायेंगे वह देश तो अपने आप सुरक्षित हो जायेगा।* बहुत वैज्ञानिक रूप से महर्षियों ने वर्णन किया है। देखिये पृथ्वी के सात सुदृढ़ स्तम्भ हैं उनमें सबसे पहला स्तम्भ गाय है। .....क्रमशः

बालोपयोगी दिनचर्या

(सांभारः- बालक अंक)

१. स्वस्थ बालक, स्वभावतः सूर्योदय होनेपर उठते और पक्षियोंके समान सूर्यास्त होनेपर सो जाते हैं, मानो वे प्रकृतिके आदेशको मानकर रहना चाहते हैं; परंतु संरक्षक अपने अनुचित व्यवहारसे उनके स्वभावको विकृत कर देते हैं।

२. बालकोंको सदा पूर्वकी ओर सिर रखकर सुलाना चाहियें। इससे सूर्यकी प्रथम किरण उनके मस्तिष्कमें प्रवेश कर उनकी मेधाको बढ़ाती है।

३. बालकोंको उठानेके समय उनके पास एक-दो मिनटतक मधुर ध्वनिसे 'हरे राम... हरे हरे' किंवा अन्य इष्ट श्लोकका गायन करना उत्तम है। इससे उनमें सदाचारका विकास होता है।

४. बालकको शौच, मुखमार्जन (और यदि सम्भव हो तो स्नान भी) कराकर प्रार्थना (यज्ञोपवीत होनेपर) संध्याका नित्य अभ्यास कराना इष्ट है।

५. इसके उपरान्त बालक खेलें, पढ़ें या घरके कामोंमें भाग लें। बालकोंमें अनुकरण-बुद्धि विशेष जाग्रत् रहती है, अतएव उससे लाभ उठाकर संरक्षकजन बालकोंको उचित और सुलभ गृह-धंधोंमें लगायें। सम्भव है आरम्भमें वे कुछ बिगाड़ करें तो भी उनकी भर्त्सना न करे। भर्त्सनासे वे हताश होकर अकर्मण्य हो जाते हैं। ठीक तो यही है कि उनके बिगाड़े हुए कामको सुधारते हुए उनका अनुमोदन करे और उनमें काम करनेका उत्साह बढ़ाये।

६. बालकोंको सदैव प्रातःकाल दिनमें पूर्वाभिमुख और सांयकाल रात्रिमें पश्चिमाभिमुख बिठलाकर भोजन करायें। ऐसा करनेसे सूर्य-प्रकाशका प्रत्यक्ष ओज उन्हें मिलता है। वे दीर्घायु होते हैं। भोजनके समय बालक पालथी मारकर बैठे, इससे आन्त्रभाग मुक्त होता और पाचन ठीक होता है।

७. बालक स्वभावतः शुद्ध सात्विक भोजन खाना चाहते हैं; किंतु संरक्षक (विशेषकर स्त्रियाँ) थोड़ा कष्ट बचानेको उन्हें अपने समान मिर्च-मसाले खानेमें लगा देते है।

८. दाँत निकलनेके समय बच्चोंका स्वास्थ्य बहुत मन्द हो जाता है। उनकी आँखें बिगड़ जाती तथा अँतड़ियाँ कमजोर हो जाती हैं। उनको ज्वर आता है और अधिक संख्यामें दस्त होते हैं। ऐसी स्थितिमें धैर्य रखकर बच्चोंको शुद्ध मातदिल वस्तुएँ खिलायें, जिससे शरीरमें बढ़ी हुई ऊष्माका शमन हो। संरक्षकोंके प्रमादसे इन दिनों अनेक बच्चे मर जाते या सदाके लिये रोगी हो जाते हैं।

इसी तरह प्रायः सात वर्षकी आयुतक बच्चोंको शीतला, चेचक, खसरा आदि ज्वरोंके होनेकी सम्भावना रहती है। इस समय भी धैर्यसे काम करना चाहिये।

९. बच्चोंकी आवश्यकताको पूरा करना ठीक है, परंतु हठ-दुराग्रहकी प्रकृत्ति रोकनी चाहिये।

१०. बच्चोंके कपड़े सदा स्वच्छ हों और उनके शरीरके मानसे सदा कुछ ढीले रहें। बहुत चुस्त या तंग कपड़ोंसे उनके रुधीर-संचारमें बाधा होती है।

११. माता-पिता या बड़े भाई-बहिन बच्चोंको अपने साथ प्रतिदिन खुले मैदानों, बगीचोंमें ले जाकर टहलायें। प्रतिदिन कुछ समय निकालकर उनके खेल-कूदमें भाग लें। ऐसा करनेसे वे दूषित संसर्गसे बचे रहते हैं।

१२. ज्वर आदि व्याधिमें बच्चोंको 'रामकवच' या अन्य 'इष्टकवच' का झाड़ा देना अमोघ

उपाय है।

१३. बालकोंके मनमें यह बात भरते रहना चाहिये कि भूत पिसाच निकट नहिं आवै। महाबीर जब नाम सुनावै।।

अर्थात् महावीर (अपना शुद्ध आचरण) सब भूत-प्रेतोंको दूर भगा देता है; क्योंकि स्वयं महावीर (हनुमान)जीने अपने शुद्ध दृढ़ आचरणके बलसे सब राक्षसोंको पराजित कर दिया था। इसलिये बालक भी प्रतिदिन व्यायाम और संध्या कर अपना बल बढ़ायें और व्यसनोंसे दूर रहकर दृढ़ आचरण रखें- 'सत्यसंध दृढ़ब्रत रघुराई' का अनुकरण करनेका प्रयत्न करें।

१४. बालक थोड़ा पढ़े और उसको अभ्यासमें लाकर चरित्र सुन्दर बनानेका प्रयत्न करें। संरक्षकगण भी उनको उपदेशोंके बदले क्रियात्मक उदाहरणद्वारा सिखानेका प्रयत्न करें।

१५. बालकोंमें कौतूहल अधिक रहता है, अतएव वे जाननेके लिये प्रश्न किया करते हैं। जहाँतक हो, उनका उचित समाधान कर देना चाहिये; इससे उनमें विचारशक्ति बढ़ती है। यदि प्रश्नका समाधान न हो सके तो मृदुतासे उनको समझाकर धीरज देना चाहिये; परंतु उनके कौतूहलको निर्दयतासे दबा देना अच्छा नहीं।

१६. बालकोंके चित्तपरसे परीक्षाका बोझा हटा देना चाहिये। आजकल शिक्षा-विभागमें अधिकारिवर्गने बच्चोंपर बहुत अधिक बोझ डाल रखा है। प्रत्येक कक्षामें आवश्यकताकसे अधिक पुस्तकोंकी नियुक्ति कर रखी है। पाठयक्रमकी रचना करनेवाले लोग पाठयक्रम बनाते समय बालककी उम्रका ध्यान न रखकर ऐसा पाठयक्रम बनाते हैं, मानो वे अपने लिये बना रहे हों। बालकोंकी आयु, बुद्धि और चित्तका बहुत कम ध्यान रखा जाता है। इससे बालकोंमें शारीरिक और नैतिक पतन बढ़ता जा रहा है।

१७. सोते समय बालकोंको पेशाब कराना चाहिये, अन्यथा वे बिछौनेको बिगाड़ देते हैं। यदि उनके हाथ पैर भी धो दिये जायँ तो उनको ठीक नींद आती है।

१८. बालकोंको हर महीनेमें एक बार साधारण रेचक औषध (जैसे अदरक, तुलसी, नीबू) देनेसे उनकी अँतड़ियोंमें मल एकत्रित नहीं होता। उनका पाचन ठीक हो जाता और ज्वर आदि व्याधियाँ दूर रहती हैं।

१९. प्रति रविवार बालकोंको दूध, भात (रोटी), शक्कर अवश्य खिलायें। इससे उनमें सूर्य-रश्मियोंका प्रभाव ठीक पड़नेसे स्वास्थ्य और मेधाकी वृद्धि होती है।

२०. बालकोंको प्रति सप्ताह मंगलवार और शनिवारको-विशेषकर शीत ऋतुमें तेलकी मालिश करके कुछ देर उन्हें प्रातःकाल धूपमें लिटा दें या बैठा दें। इससे उनमें अस्थिदौर्बल्य (Rickets) नहीं होता।

२१. ईर्ष्यालु स्त्रियोंके दृष्टि-दोषसे सुरक्षित रखनेके लिये बच्चोंके गलेमें राममन्त्र अथवा अन्य इष्ट मन्त्रका ताबीज बाँध दें। विशेष अवसरपर उन पर राई, नमक निछावर कर अग्निमें डाल दें।

२२. भोजन करनेके पहले और पश्चात् दोनों बार बालकोंको हाथ, पैर, मुँह, नाक, कपाल, सिरको धोकर गीला रखनेका अभ्यास करायें। इससे उनकी ज्ञानेन्दियाँ विशेषकर नेत्रज्योति दीर्घायुतक सुरक्षित रहती हैं। जब बालकोंका श्वास दाहिने नथुनेसे चलता हो (सूर्यदेव चैतन्य हों), तब उन्हें खानेको देनेसे पाचन-क्रियामें विकार नहीं होता।

२३. पढ़ने-लिखनेमें बायीं ओरसे प्रकाश आनेका प्रबन्ध रहे, अन्य ओरसे आनेवाला प्रकाश बालकोंकी आँखोंको हानि पहुँचाता है। बालक रीढ़को सदा सीधी रखकर पढ़ें या लिखें। पुस्तकपर अधिक झुकनेसे फुफ्फुस खराब हो जाते हैं और कालान्तरमें क्षय होनेका डर

रहता है।

२४. बालकोंको शिक्षा देनेके लिये सदा सुगम, स्थूल वस्तुओंका उदाहरण लेकर कठिन, सूक्ष्म नियमकी ओर ले जाना चाहिये। उनकी ज्ञानेन्द्रियोंका अधिक-से-अधिक उपयोग करना चाहिये। उनके सामने ऐसी स्थूल वस्तु रखें, जिन्हें वे छुएँ, सूँघें, बजायें, चखें, देखें। वे अपनी सर्वज्ञानेन्द्रियोंका उपयोग कर वस्तुओंका ज्ञान प्राप्त करें। शिक्षाका उत्तम ढंग यही है।

२५. बालकोंके मननार्थ कुछ सुन्दर चौपाईयाँ दी जाती हैं। मानस तो अगाध मानस है और निर्मल जलसे (सुन्दर विचारोंसे) परिपूर्ण है; किंतु यात्री अपने प्रयोजनानुसार जल ग्रहण कर तृप्त हो जाते हैं।

बालक अपने 'स्वास्थ्य' के लिये सदा इस श्लोकका मनन करते रहें। यहाँ केवल बाल-बुद्धिगम्य अर्थ लिखा जायगा-

नीलाम्बुजश्यामलकोमलांग
सीतासमारोपितवामभागम्।
पाणौ महासायकचारुचापं
नमामि रामं रघुवंशनाथम्।।

'मैं रघुवंशके नाथ श्रीरामको नमन करता हूँ, जिनका शरीर नीलकमलके समान श्याम और कोमल है, वाम भागमें सीताजी विराजमान हैं और हाथमें महान् बाण और सुन्दर धनुष हैं। भावार्थ-रामजी अपने रघुवंशकी रक्षा करते हैं, अपने ऐश्वर्यसे सब जीवों (रघु- जीव; वंश- समुदाय) की रक्षा करते हैं। उनके पास सदा गृहस्थीकी सुन्दरता रहती है और उनका शरीर भी सदा स्वस्थ रहता है तथा दुष्टोंको दण्ड देनेके लिये उनके हाथमें सदा धनुष-बाण रहते हैं। रामजी स्वस्थ, उत्तम गृहस्थ और नीतिज्ञ हैं; अतः मैं उनकी ओर झुकता हूँ, उनको स्वास्थ्यका उत्तम आदर्श मानकर उनका अनुचर (अनुयायी) होनेका प्रयत्न करता हूँ।

सठ सुधरहिं सतसंगति पाई। पारस परस कुधातु सुहाई ।।

शठ-हठ, दुराग्रह। सत्संगति-भली मित्रता, नियम- पूर्वक काम करते रहनेकी बान, प्राकृतिक जीवन; पारस-परमरस (ओषजन), कुधातु-विकृत धातुएँ, जो शरीरमें सात प्रकारकी हैं। नियमपूर्वक काम करते रहनेसे वो भले मित्रके उपदेशसे दुराग्रह सुधरता है; बदलकर दृढ़ संकल्प हो जाता है, जैसे परमरस (वातावरणसे लिये हुए ओषजन)- से शरीरस्थित धातुओंके विकार मिट जाते हैं।

व्यंग्यार्थ- अपने शारीरिक और मानसिक दोषको हटानेके लिये प्रतिदिन नियमपूर्वक गहरा श्वासोच्छ्वास करते रहना चाहिये। यह अत्यन्त सुगम है; परंतु महान् भयसे बचा लेता है। प्राकृतिक जीवन ही सत्संग है।

बिन सतसंग बिबेक न होइ।
राम कृपा बिनु सुलभ न सोई।।

रामकृपा- माता, पिता, गुरुजनोंका अनुग्रह, आत्मसंयम। विवेक- सत्य-असत्य तथा भले-बुरेकी पहचान। नियमपूर्वक बिना काम किये सत्य और असत्यकी पहचान नहीं होती है। नियमपूर्वक काम करना भी माता, पिता, गुरुजनोंके अनुग्रह बिना वा आत्मसंयम बिना सुलभ नहीं है। भावार्थ- आत्मसंयमसे नियमपूर्वक काम करते रहनेसे सत्य और असत्यकी पहचान हो जाती है।

काहु न कोउ सुख दुख कर दाता। निज कृत करम भोग सबु भ्राता।। करम प्रधान बिस्व करि राखा। जो जस करई सो तस फलु चाखा।।

लक्ष्मणजी निषादको समझा रहे हैं। अन्य जनको दोष नहीं देना चाहिये अपने ही कर्मको सुधारना चाहिये। यही शान्तिका अमोघ उपाय है, अन्यथा ईर्ष्याभाव बढ़ता है और अत्याचारका प्रसार होता है।

कामधेनु
(कहानी)
(लेखक- श्री'चक्र')

पिछले अंक से आगे.....

मस्तक झुकाकर वे सोचने लगे। किसी गम्भीर चिन्तामें पड़ गये दीखते थे।

'क्या आप कुरानकी शिक्षाके सम्बन्धमें कुछ कहेंगे।' मैंने प्रसंग बदलनेके लिये ही कहा था। वैसे कोई उत्सुकता मुझमें थी नहीं।

'मैं तो एक अनपढ़ खानसामा हूँ।' उन्होंने कहा 'मैंने कुरानशरीफपर श्रद्धा करना सीखा है। उसे पढ़ सकूँ ऐसी लियाकत नहीं। फिर भी में विश्वास करता हूँ कि वह एक खुदाई किताब है और उसमें कोई खराब बात नहीं।'

'आपने सुना तो होगा ही।' मुझे इस अनोखे श्रद्धालुके प्रति कुतूहल हो रहा था।

'उसके लिये मुझे वक्त कहाँ है।' उन्होंने कहा 'मैं इस अपनी कामधेनुसे छुट्टी ही कब पाता हूँ।' उन्होंने नीमके नीचेकी ओर संकेत किया।

'आपका मतलब शायद उस गायसे है।' मैं उसे अबतक भूल गया था। अब ध्यानमें आया कि वह इन्हीकी गया है और उसका शरीर इस बातका साक्षी है कि वृद्ध उसकी कितनी सेवा करते हैं।

'हाँ' उसी गायसे। जिसके पास तुम अभी बैठे थे' उन्होंने उल्लाससे कहा 'मैंने समझा था कि कोई उसे छोड़ रहा है, इसीसे पुकारा था। लेकिन तुरंत ही मुझे अपनी भूल मालूम भी हो गयी थी। जैसे वे क्षमा माँग रहे हों।

'मैं हिंदू हूँ। गौको हम देवस्वरूप तथा पूजनीय मानते हैं।' मैं यों ही कह चला था 'उसे छेड़ने या सतानेकी कल्पना हमारे सम्बन्धमें करना हमारे साथ अन्याय है।'

'तुम अपनी बात कर सकते हो, उन वृद्धने कहा 'यहीं घरोंमें बाँधकर गायाको चारा-पानीसे तरसानेवाले हिंदू कम नहीं हैं। दूधकी आखिरी बूँदतक दुहकर गायके बच्चेको तड़प-तड़पकर मरनेके लिये छोड़नेवाले ग्वाले भी हिंदू हैं और मंडीमें अनाजकी ओर मुँह बढ़ाते ही यमराज की भाँति डंडा मारनेवाले दुकानदार तो शयद पूरे अहिंसक हिंदू हैं।' उनके स्वरमें घृणा थी।

'हम उसका दण्ड भी पा रहे हैं।' मैंने मस्तक झुकाकर स्वीकार किया 'गायोंके मूक अश्रु अभिशाप बनकर हिंदूजातिको लग गये हैं और वह अपना कर्मफल भोग रही हैं' मुझे गहरा धक्का लगा था।

'अरे नहीं' जैसे मेरे अन्तःकष्टको उन्होंने देख लिया हो 'यह पाप तो आज दुनियाके कुल आदमी ही कर रहे हैं और दयाको छोड़कर वे खूँखार बन गये हैं।' इस एकान्तमें भी उन्हें सम्भवतः विश्वकी परिस्थितिका कुछ आभास मिल जाता था।

'आपको यह गाय कहाँ मिल गयी।' इस खंडहर निवासीके पास खरीदनेके लिये मूल्य तो होनेसे रहा। प्रसंग भी नीरस हो गया था। मैंने उसे बदलना ठीक समझा। यह मैं लक्षित कर चुका था कि अपनी गायकी चर्चासे वे बहुत उल्लसित हो उठते हैं।

'बड़ी लंबी कहानी है।' एक दीर्घ श्वास लेकर वे चुप हो गये। पता नहीं क्यों उनके नेत्रोंसे अश्रु टपकने लगे थे।

(४)

ह्यूमैनको गाय मिल गयी और उसे पाते ही उन्होंने अपना प्रयोग प्रारम्भ किया। एक-दो दिनमें ही उनहें पता लगा कि अरे-जैसे बड़े शहरमें रहकर वे प्रयोग नहीं कर सकते। पंद्रह मील दूर यमुनाकिनारे उन्होंने एक ढाक-का

जंगल खरीद लिया। वहीं एक छोटा बँगला बनवा लिया और उस गायको लेकर आ गये।

सिंचित जंगल घासमें भर जाना ही था। चारों ओर काँटेदार तार लगाा दिये गये थे। बँगलेमें साहब, खानसामा, गाय और उसकी बछड़ीको छोड़कर कोई प्राणी नहीं रहता था।

पहले ही दिन खानसामा को आश्चर्य हुआ जब साहब एक छोटी लकड़ीमें रूमाल बाँधकर सबेरे गाय चराने निकले। 'यह मेजको झाड़नेके लिये तो ठीक था' पर गाय चरानेके लिये। फिर साहब एक चरवाहा क्यों नहीं रख लेते? बेचारा खानसामा चुप रहा। वह जानता था कि उसका साहब झक्की है।

दो महीनोंसे ह्यूमैन अपनेको तैयारकर रहे थे। अनेक उलट-फेर उन्होंने अपने भोजन तथा रहन-सहनमें किये थे। चाय वे छोड़ चुके थे और धूपमें टहलनेका अभ्यास भी कर चले थे।

घिरे हुए जंगलमें साहब अपने झाड़नसे गायके ऊपर बैठनेवाले मक्खी-मच्छर उड़ाते हुए उसके पीछे-पीछे घूमते रहे। कहीं रोकनेकी आवश्यकता नहीं थी। बड़ी नालियोंमें स्वच्छ जल भरा था। दोपहरको खानसामा आदेशके अनुसार वहीं भोजन दे गया। पहले दिन भूमिपर बैठकर साहबने भोजन किया।

पतलून छूट गयी। उससे पृथ्वीपर बैठनेमें अड़चन होती थी। हाफ पाइंट और हाफ कमीज बस! हैट धूपसे बचानेको चाहिये ही। काँटा चम्मच छोड़कर उन्होंने हाथसे भोजन करना प्रारम्भ किया। खानसामा शहर जावे तो रोटी पहुँचावे कौन? केक, बिस्कुटके बदले टिक्कर ठोंके जाने लगे।

'साहब क्या पागल हो गया है।' खानसामा कभी-कभी सोचता, वह सुबह गायके पैर धोकर वह गंदा पानी मुँहमें डालता है। हिंदूओंकी तरह फूल, रोलीसे उसकी पूजा करता है। शामको गायके पास घीका चिराग रातभरके लिये जलाता है। जैसे गाय कोई बच्चा है जो अँधेरेमें डर जायगी। रातको चटाई डालकर वहीं जमीनपर सो जाता है।' दिनभर अकेले रहते-रहते वह ऊब जाता था।

'साहब बहुत भला है। भले वह आधा पागल हो।' कभी-कभी खानसामा सोचता। 'मैं जैसी रोटी बनाता हूँ, वैसी खा लेता है। गायके पास तो झाड़ू खुद देता है। कमरेमें भी झाड़ू न दिया हो तो अपने आप देने लगता है। कभी डाँटता नहीं। तनख्वाह ठीक पहलीको दे देता है। खुदा उसका पागलपन दूर करे।' खानसामा को निश्चय हो गया था कि साहबके दिमागमें जरूर कुछ खराबी है।

'आखिर यह गाय है किसलिये।' सच पूछिये तो गायने खनसामाको अच्छी उलझनमें डाल दिया था। 'दूध उसकी बछड़ी पीती है। साहब कभी उसे दुहता नहीं और दुहकर करे भी क्या; उसने तो दूध पीना ही छोड़ दिया है। जरूर इस गायपर कोई जिंद सवार है और उसीने साहबको पागल बना दिया है।' कई बार साहबकी आँख बचाकर वह कलमा पढ़कर गायपर फूँक मार चुका है।

'आज मैं देखूँगा कि जंगलमें साहब दिनभर क्या करता है।' लगभग छः महीने बाद उसने एक दिन निश्चय किया अैर उस दिन साहबको रोटी देकर बँगले नहीं लौटा। झाड़ियोंमें छिप रहा वह।

'मदर' मैं क्या निराश ही होऊँगा।' खानसामा टूटी-फूटी अंग्रेजी समझ लेता था। गाय आरामसे एक घने ढाकके नीचे बैठी थी। उसकी बछड़ी इधर-उधर फुदक रही थी और साहब उसके सामने घुटनोंके बल बैठा हुआ था। उसने हाथ जोड़ रक्खे थे और बेतरह रो रहा था।

खानसामा चीख पड़ा। यह क्या? गाय आदमी-जैसी साफ अंग्रेजी बोल रही है। वह भयके मारे बेहोश हो गया। पता नहीं कबतक वह वैसे ही पड़ा रहा। जब उसकी आँखें खुलीं तो वह बँगलेमें पलंगपर लिटया हुआ था और उसका साहब सामने खड़ा मुस्करा रहा था।

(५)

'फिर कभी दर्शन करूँगा' मैं उठ खड़ा हुआ। चार बज गये थे और मैं कुटियासे डेढ़ मील दूर था। जाड़ोंमें अँधेरा भी तो जल्दी होता है।' दिन छिपनेतक पहुँच जानेका विचार था। अन्ततः अपने गोपालके पास दीपक भी तो जलाना है।

'दूध तो पीते जाओ!' वे वृद्ध उठ खड़े हुए। बाहर एक नन्हा-सा ढाक था। कुल पाँच-सात पत्ते होंगे उसमें। एक बड़ा-सा पत्ता उन्होंने तोड़ लिया और मेरे उत्तरकी प्रतीक्षा किये बिना दोना मेरे हाथमें घर दिया।

गाय नीमके नीचे खड़ी हो गयी थी। 'तुम थनोंके पास बैठ भर जाओं।' वे गायके सामने घुटने-ठेककर बैठ चुके थे। 'अम्मा,अपने घर ये मेहमान आये हैं।' मैं आश्चर्यचकित रह गया। गायके चारों थनोंसे दूधकी धारा बहने लगी थी। 'बस' एक दोना पीकार मैंने कहा।

'उहुँ, दूध खराब मत करो।' वे पीछे खड़े हँस रहे थे। 'अब यह तुम्हारे बसकी बात नहीं। दूध गिरे, वहाँतक चुपचाप पीते जाओ।'

मुझे कहने दीजिये कि सचमुच मैं ऊपरसे 'ना' कह रहा था। उतना स्वादिष्ट दूध जीवनमें फिर मिलेगा, ऐसी आशा नहीं। बराबर दोना भरता और पीता रहा। नीचे भूमिमें दूधका कीचड़ हो गया। गलेतक भरकर पीया होगा, तब कहीं थनोंसे उसकी धरा रूकी।

'सचमुच कामधेनु पायी है आपने।'उठकर मुख पोंछते हुए मैंने कहा। हाथ यमुनाजीमें धेनेका बिचार कर लिया था।

'यह मेरे साहबकी कामधेनुकी बछड़ी है।' उन्होंने बताया 'इसने कभी कोई बच्चा नहीं दिया।'

'कामधेनु तो केवल दूध ही नहीं देती।' मैंने उत्सुकतावश पूछा।

'मुझ फकीरको इस पेटके गड्ढेको भरनेके अलावा और चाहिये भी क्या।' वे गद्गद हो रहे थे। 'फिर मुझमें उतनी श्रद्धा कहाँ है? मैं वैसी सेवा कहाँ कर पाता हूँ।' उनके नेत्रोंने कपोलोंको भिगो दिया था।

'वह तो साहब ही थे' थोड़ी देर रूकरकर वे बोले 'उन्हें कामधेनुने खुदाका जलवा तक दिखाया और वह खुद उन्हें लेकर उस मालिकके दरबारमें चली गयी।' बहुत पूछकर भी मैं इस अन्तिम वाक्यका मतलब नहीं समझ सका। उन्होंने मुझे 'देर होती है, जाओ।' कहकर बिदा कर दिया।.....

मैं जब कुटियासे बाहर प्रातः बैठता हूँ तो शामको भिगोये चनोंका जो मेरे गोपालको भोग लग चुका होता है- अपना भाग लेने मयूरोंका झुंड आ जाता है। कई छोटे बछड़े आ जाते हैं और यदा-कदा एक दो गायें भी।

आज प्रातः मयूर आ गये हैं। वे तीनों, पर फैलाकर नाच रहे हैं। ये पाँच बछड़े प्रायः रोज आते हैं। बड़े नटखट है। सारा चबूतरा कूदकर खेद डालते हैं। आज तो कपिला आयी है और नीचे खड़ी हुंकारसे चने माँगती है शायद।

सहसा कल शामकी बातें स्मरण हो आयीं। 'ये इतने रूपोंमें साक्षात् धर्म मुझे वेष्टित किये हैं और वे कामधेनु पुकार रहीं हैं।' मैंने सब चने गायके सम्मुख चबूतरेपर डाल दिये औरनीचे जाकर उसकी चरण-रज मस्तकसे लगा ली!

गोमाता की दारूण कविता

केशव की इस धरती का गौपालन में दिखलाता हूँ
गोमाता की सेवा का कर्त्तव्य धर्म बतलाता हूँ।
इस भारत भू में ही नहीं पूरे विश्व में अलख जगाता हूँ
उस गैया की चीत्कारों का करूण क्रंदन सुनाता हूँ।।

(१)

कामधेनु कपिला और नन्दिनी अद्‌भुत अनुपम नाम हैं, दिग दिगन्त ने गाए जिनके सदा-२ गुणगान हैं।

रोम-रोम में जिस माता के कोटि देवन का वास है, फिर भी कटती ये माताएँ उत्तर किसके पास है?

दृश्य दीन दशा का इस मैया की आज दिखाता हूँ, गैया की चीत्कारों का करुण क्रुन्दन सुनाता हूँ।

(२)

धिक्कार तुम्हें हिन्दु और हिन्दुस्तानी होने में, यदि आज बने हो साक्षी इसके गोणित के आँसू रोने में।

पंचगव्य जिसका पावन और पतित पावन है, ऐसी धेनु का कातिल तो रावण नहीं महारावण है।

जिसके पय का पान कर ओजस तेजस बल प्राप्त किया, पर लहू को इसके हाय! मनुष्य गन्दी नाली में बहा दिया।

''कतलखानों के घोर नाटकीय उन दृश्यों को दिखलाता हूँ गैया का चीत्कारों.....।

(३)

सबसे पहले गौमाताओं को खूब दौड़ाया जाता है, दौड़ाकर फिर गोवंश को निढ़ाल बनाया जाता है।

और भापित पानी की बौछारों से इन्हें नहलाया जाता है, पीट-२ कर कोड़ों से फिर खूब धुनाया जाता है।

गौमाता के अंग-अंग का व्यापार आज दिखलाता हूँ, गैया की चीत्कारों.....।

(४)

जब यंत्रों और औजारों से गैयाएँ जकड़ली जाती है, फिर उसी क्रम में उस मूक प्राणी की खालें उतारी जाती है।

अरे! नर पिशाच तेरी आँखों में फिर भी न आता पानी है, रे अधम तेरा जन्म लेना भी धरती पर बेमानी है।

और समझ तेरी पुरतों की न आज से कोई निशानी है, गोविन्द के गौवत्सों की अवव्यथा तुम्हें बताता हूँ, गैया की चीत्कारों .....।

(५)

गाभिन गायों को इससे भी अधिक सताया जाता है, समय पूर्व ही उनका वह प्रसव गिरया जाता है।

उस अजन्मे बच्चे तक को फिर मूल बनाया जाता है, गौवत्स के चर्म तक से व्यापार बढ़ाया जाता है।

नख से शिख तक का शृंगार बनाया जाता है। (तथाकथित रईसों का)

इससे अधिक बतलाने पर अब हृदय को रोता पाता हूँ, गैया की चीत्कारों का.....।

(६)

फिर भी आज गोभक्ति के निरूपा भ्रम को पाले हैं, इसी कारण बढ़ रही ये निरंकुश सरकारें हैं।

आकाओं को खुश करने का यह तो एक बहाना है, क्या धन विदेशी अर्जन का बस यही एक ठिकाना है।

तुम क्यों आज पथ भ्रष्ट हुए हो राज इसका बतलाता हूँ, गैया की चीत्कारों का करुण क्रन्दन सुनाता हूँ।

(७)

जब छप्परा रचकर कविवर (श्रीनरहरी दासजी) ने गौमाता से सुनवाया था, तब शासक हिन्दू ने नहीं बादशाह अकबर ने प्रतिबंध लगाया था।

हाँ! रामकृष्ण की धरती पर वो दिन गए वो रैन गए इसलिए आज हमारे सुख अमन और चैन गए।

फिर आज उसी खुशहाली को मै पाना तुम्हें सीखाता हूँ, गैया की चीत्कारों का.....।

(८)

अपना दूध पिलाने में यह कभी न भेद दिखलाती है, चाहे हिन्दू हो या मुस्लिम हो, तृप्त सबको ही कर जाती है।

शेष विश्व के लोगों तुम भी गौ-हित में कुछ त्याग करो, इसे मात्र न पशु समझ अब माता सम व्यवहार करो।

यदि कर पाए ऐसा तो फिर लाख दुआएँ पाओगे, क्षमाशील इस ममतामयी से आशीष सदा ही पाओगे।

कामधेनु की महिमा का गुणगान आज सुनाता हूँ, गैया की चीत्कारों का....।

(९)

यदि चाहते हो रक्षा तो संकल्प आज यूं दृढ़ करो, गोवंश के संवर्धन में तन-मन और धन अपना अर्पण करो।

आओ मित्रों हम भी यहीं से एक नेक शुरूआत करें, गोग्रास नियम बद निकालने का आज से यह काम करें और गौ ग्राम और गोशाला को पुन-२ आबाद करे-२।

गैया की चीत्कारों का करुण क्रुन्दन सुनाता हूँ।

जय गोमाता - जय गोपाल।

दान-एक विहंगम दृष्टि

साभारः- दानमहिमा अंक

(लेखक-राधेश्याम खेमका सम्पादक गीताप्रेस)

दान इस प्रकार करें

अपनी शक्ति एवं सामर्थ्यके अनुरूप स्वेच्छासे, कृतज्ञतासे, मधुर वाणीके साथ, श्रद्धापूर्वक एवं संकोचपूर्वक इस भावनासे कि सारे धनके वास्तविक स्वामी तो भगवान ही हैं। वे ही दानदाता हैं और वे ही स्वयं लेनेवाले ग्रहीता हैं, मैं तो केवल निमित्तमात्र हूँ- इस प्रकार विचारकर दान करनेके लिये निरन्तर तत्पर रहना चाहिये। परंतु सामान्यतः इस भावनामें चूक हो जाती है, उदाहरणार्थ मान लें की ऐसा अवसर प्राप्त हो कि किसी असहाय रोगीको औषधि और दूधकी आवश्यकता है और उसके पास इसके साधन नहीं हैं। हमें यह बात मालूम हुई और हमने दयापूर्वक उसकी व्यवस्था कर दी, परंतु स्वाभाविक रूपसे हमारे मनमें यह भाव आता है कि उस रोगीको यह तो मालूम होना चाहिये कि सहायता मेरेद्वारा की जा रही है। हम प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूपसे यह बात किसी भी प्रकार उसकी जानकारीमें कराते हैं, वस्तुतः यह बात नीचे दर्जेकी है। उच्चकोटिकी बात तो यह है कि परमात्मप्रभुका धन प्रभुकी सेवामें लग रहा है, इसमें हमारे नामकी क्या आवश्यकता है। इस प्रकार हमें किसी भी प्रकारके अहंकारसे बचना चाहिये।

प्रकृतिप्रदत्त दान

वस्तुतः स्वयं सृष्टिकर्ता परमात्मा प्रतिक्षण प्रकृतिके माध्यमसे हमें दान देते रहते हैं, सूर्यनारायण अपने प्रकाशसे हमें ऊर्जा तथा प्राणशक्तिका दान देते हैं। धरतीमाता हमें अन्नरूपी सामग्री देती हैं, नदियाँ जलदान करती हैं, वृक्ष निःस्पृह भावसे छाया और फलदान करते हैं, वायुदेव निरन्तर संचरणकर श्वास-प्रश्वासके रूपमें हमें जीवनदान देते हैं, बादल सागरसे जल आकर्षितकर जलकी वर्षाकर अपना अस्तित्वही समाप्त कर देते हैं। प्रभुप्रदत्त प्रकृतिके सहयोगसे ही मनुष्य जीवन धारण करनेमें समर्थ होता है। तो क्या प्रकृतिके सतत दानसे हमें यह प्रेरणा नहीं मिलती कि हम भी अपनी प्राप्त वस्तुओंका दान करें।

दानके अनेक रूप

वास्तवमें दानके अनेक रूप हैं। कुछ तो प्रत्यक्ष दान ऐसे हैं, जिसमें द्रव्यका विनियोग अर्थात् अपने अर्जित धनका त्याग करना पड़ता है, जैसे अन्नदान, जलदान, वस्त्रदान, भूमिदान, गृहदान, स्वर्णदान, शय्यादान, तुलादान, पिण्डदान, आरोग्यदान, गोदान इत्यादि। इन दानोंकी अपनी महत्ता है, इनके अलग-अलग सबके देवता हैं और सबके मन्त्र हैं, जिनका स्मरण संकल्पके समय करनेकी विधि है, पर कुछ ऐसे भी दान हैं, जिनके लिये किसी प्रकारका धन खर्च नहीं करना पड़ता, इस प्रकारके दानोंका भी कम महत्व नहीं है, जैसे-

१. मधुर वचनोंका दान- यदि कोई व्यक्ति कष्टमें है, तो उसे मधुर वचनोंके द्वारा सान्त्वना प्रदान की जा सकती है, कभी-कभी कठोर वचनोंसे आन्तरिक पीड़ा हो जाती है, परंतु मधुर वचन सबको प्रिय लगते हैं। मधुर वचनोंसे स्वयंको भी प्रसन्नता मिलती है।

२. प्रेमका दान- वास्तविक प्रेम तो त्यागमें समाहित है। जब हम दूसरोंके प्रति प्रेमका भाव रखते हैं तो मौकेपर उनके लिये त्यागहेतु भी तत्पर रहना पड़ता है। सबके प्रति प्रेम रखना एक प्रकारसे परमात्मप्रभुके प्रति प्रेम करना है।

३. आश्वासनदान- किसी संकटग्रस्त व्यक्तिके जीवनमें आश्वासनका बड़ा महत्व है।

कभी-कभी लोग अपने जीवनसे निराश होकर आत्महत्यातक करनेको तैयार हो जाते हैं। ऐसी स्थितिमें सहायताका आश्वासन देकर अथवा सत्प्रेरणा देकर हम उन्हें बचा सकते हैं। किसीकी विपरीत परिस्थितियोंमें भी सहायताका आश्वासन देकर उसका मनोबल बढ़ाया जा सकता है।

४. आजीविकादान- जीवनयापन एवं परिवारपालनके लिये आजीविकाकी आवश्यकता होना स्वाभाविक है। जो व्यक्ति किसीके लिये आजीविकाकी व्यवस्था कर देते हैं, उनके द्वारा प्रदत्त दान आजीविकादान है।

५. छायादान- छायादान एवं फलदार वृक्ष लगाकर राहगीरोंको छायादान किया जा सकता है।

६. श्रमदान- अपनी समार्थ्यके अनुसार मौकेपर दूसरोंके लिये श्रमदान करनेसे स्वयंको आनन्दकी अनुभूति होती है- यह आनन्द ही हमारी आध्यात्मिक उन्नतिकी अनुभूतिका द्योतक है। कोई वृद्ध या अशक्त व्यक्ति अपना सामान नहीं उठा पा रहा है तो उसका सामान उठा दें। अपने समर्थ पड़ोसीका बाजारसे सामान ला दें- इस प्रकारके कितने ही छोटे-मोटे कार्य हैं, जो श्रमदानके अन्तर्गत आ सकते हैं।

७. शरीरके अंगोंका दान- कहा गया है - 'शरीरं व्याधिमन्दिरम्'। यह शरीर व्याधि (रोगों)- का मन्दिर है। मानव-शरीर कभी भी रोगोंसे ग्रस्त हो सकता है। आजकल कई असाध्य रोग हैं, जिनके कारण व्यक्ति मृत्युशय्यापर आ जाता है, ऐसे समयमें कभी-कभी उसे रक्तकी आवश्यकता होती है। रक्तदानसे किसीकी भी जिन्दगी बचायी जा सकती है तथा स्वयंको भी कभी रक्तकी जरूरत पड़ सकती है। रक्तका कोई विकल्प नहीं होता और न यह कृत्रिम रूपसे तैयार हो सकता है। मनुष्यको अपने जीवनकालमें रक्तदान-जैसा महान् कार्य अवश्य करना चाहिये।

इसी प्रकार गुर्दा (किडनी) के दानकी भी आश्यकता कभी-कभी किसीके लिये पड़ती है। प्रत्येक व्यक्तिके शरीरमें दो गुर्दे रहते हैं, कभी किसीके दोनों गुर्दे खराब हो जाते हैं, तो डॉक्टरकी सलाहपर किसी स्वस्थ मनुष्यके एक गुर्देका प्रत्यारोपण करनेसे उसकी जान बचायी जा सकती है। गुर्दादान करनेवाले व्यक्तिका भी एक गुर्देसे भलीभाँति काम चल सकता है। इस प्रकार गुर्देका दान भी उत्तम कोटिका है। इसी प्रकार यकृत(लीवर)का प्रत्यारोपण भी होता है।

८. समयदान- निःस्वार्थ भावसे किसी सेवाकार्यमें अपने समयका विनियोग करना समयदान है।

९. क्षमादान- कोई शक्तिशाली एवं सामर्थ्यसम्पन्न व्यक्ति अपराध होनेपर भी अपराधीको दण्ड न देकर क्षमा करे तो उसे क्षमादान कहते हैं। यह कोई सहनशील और उत्तम चरित्रका व्यक्ति ही कर सकता है।

क्षमाशील मनुष्यकी विशेष महिमा शास्त्रोंमें कही गयी है-

क्षमा धर्मः क्षमा सत्यं क्षमा दानं क्षमा यशः।
क्षमा स्वर्गस्य सोपानमिति वेदविदो विदुः।।

क्षमा ही धर्म है, क्षमा ही सत्य है और क्षमा ही दान, यश और स्वर्गकी सीढ़ी है। क्षमाका विरोधी भाव क्रोध है। यह क्रोध दूसरेकी कम अपनी अधिक हानि करता है। क्रोधपर विजयी होनेपर ही क्षमाकी प्रतिष्ठा होती है।

१०. सम्मानदान- किसी व्यक्तिको सम्मान देनेसे उसकी अन्तरात्मा प्रसन्न हो जाती है। अतः दूसरोंको सम्मान देनेका स्वभाव बना लेना चाहिये। एक दोहा प्रसिद्ध है-

गोधन गजधन बाजिधन और रतनधन दान।
तुलसी कहत पुकार के बड़ो दान सम्मान।।

११. विद्यादान- विद्यादान ही मनुष्यका सर्वोत्तम धन है। विद्या मूलतः दो प्रकारकी होती है- पारलौकिकी और लौकिकी। पारलौकिकी विद्या अध्यात्मविद्या है। वस्तुतः विद्या वही है, जिससे मुक्ति (मोक्ष) मिले (सा विद्या या विमुक्तये)। लौकिकी विद्याका भी कम महत्व नहीं है। चौरादिकोंसे नहीं चुराये जानेसे, कभी क्षय न होनेसे तथा सब पदार्थोंसे अनमोल होनेसे विद्याको ही सब पदार्थोंमें उत्तम पदार्थ कहा गया है। विद्यादान अनेक प्रकारसे किया जा सकता है। अध्यापनके द्वारा, छात्रोंको पुस्तकदान देकर, छात्रवृत्ति, आवास तथा अन्यान्य सामग्री देकर भी विद्यादान किया जा सकता है। विद्यालय-महाविद्यालय, विश्वविद्यालय और शोधसंस्थानकी स्थापना करना भी विद्यादानका प्रमुख अंग है।

१२. पुण्यदान- किसी भी अपने स्वजन व्यक्तिकी मृत्युके समय या मृत्युके बाद उसे सद्गति मिले, करुणावश अपने पुण्यका दान किया जाता है। अपने जीवनके पुण्यवाहक कर्म-व्रत, तीर्थसेवा, सन्तसेवा, अन्नदान आदिके पुण्यफलको किसीके निमित्त संकल्प कर देना पुण्यदान है।

१३. जपदान- पुण्यदानका ही एक दूसरा रूप है जपदान। कई लोग माता-पिता तथा अपनी सन्तान आदिकी सुख-शान्ति एवं आरोग्यताके लिये जप करते हैं। यह भी एक प्रकारका अप्रत्यक्ष दान है। किसी दूसरेके भलेके लिये जपदान करना एक महत्वपूर्ण कार्य है। इस निमित्त नाम-जप आदि भी किये जाते हैं, जिसका दोहरा लाभ है। ऐसे व्यक्ति परोपकारी एवं आध्यात्मिक प्रवृत्तिके होते हैं।

१४. भक्तिदान- भगवद्भक्तिका मार्ग बताकर उस पथपर किसी को आरूढ़ करा देना भक्तिदान है। इसमें सबका कल्याण है।

१५. आशिष्दान- किसी साधु- संन्यासी, संत तथा कर्मनिष्ठ ब्राह्मणद्वारा अथवा सती-साध्वी, प्रौढ़ महिलाद्वारा उन्हें प्रणाम, अभिवादन किये जानेपर वे जो आशीर्वाद प्रदान करते हैं, उसे आशिषदानकी संज्ञा दी जाती है।

ये सभी प्रकारके दान मानव- जीवनके कर्तव्यरूपमें आध्यात्मिक उन्नतिके साधन हैं।

इसके साथ ही कुछ ऐसे दान हैं जो द्रव्यपर ही आधारित हैं, उनका भी कम महत्व नहीं है।

१. आश्रयदान- जो व्यक्ति सम्पन्न और उदार होते हैं, वे धर्मशालाएँ आदि बनवाकर यात्रियोंके लिये रात्रिविश्रामका आश्रय देते हैं। कई अनाथाश्रम, वृद्धाश्रम- जैसी संस्थाएँ निराश्रितोंको आश्रय देती हैं। जहाँ भोजन, वस्त्र तथा अन्य वस्तुओंको भी प्राप्त करनेकी सुविधा रहती है। इसके साथ ही किसी अभ्यागत, अतिथिको कुछ समयके लिये आश्रय देने भी पुण्यप्रद है।

२. भूमिदान- सम्पत्तिशाली व्यक्ति किसी गरीब ब्राह्मणको अथवा अपने अधीनस्थ सेवकको भूमिदान करते हैं तथा मन्दिर, विद्यालय, धर्मशाला, गोशाला इत्यादिके लिये भूमिदान दिया जाता है। भूमिदानका बड़ा महत्व है। स्वतन्त्र भारतमें संत विनोबा भावेने गरीब भूमिहीनोंके लिये बड़े लोगोंसे भूमि लेकर भूमिदान कराया था, जो भूदान- आन्दोलनके नाम से प्रसिद्ध है। आज गोमाता को भूमिदान की आवश्यकता है। गोचर के लिये किया गया भूमिदान अक्षयदान होता है। इसका फल भी अक्षय होता है।

३. स्वर्णदान- दानमें स्वर्णदानकी विशेष महिमा है। स्वर्णदानसे ऐश्वर्य और आयुकी वृद्धि शास्त्रोंमें बतायी गयी है। किसी भी वस्तुके अभावमें उस वस्तुके निष्क्रयके रूपमें स्वर्णदान करनेकी विधि है। **शेष अगले अंक में.....।**

गाँवों के अनाश्रित गोवंश की स्थिति और प्रबन्धन

एक गोसेवक

अगर आप गाँवों में रहते हैं या गोसेवा से जुड़े हुए हैं या इस विषय पर यदि आपका कुछ चिंतन हैं, तो आपको लगभग हर गाँव में गायों का छोटा या बड़ा एक ऐसा झुण्ड विचरण करता हुआ जरूर दिखाई देगा जिसका कोई धणी-धोरी सामान्यतया सामने नहीं होता है। सभी लोग इन्हें आवारा गायों के नाम से सम्बोधित करते हैं। हाँ अगर कोई गाय स्वस्थ हो और ब्याहने वाली हो तो एक नहीं दस उसके मालिक बनकर आ जायेंगे।

आपने और हमने नीलगाय आदि को तो आवारा या जंगली पशु के रूप में देखा है, कच्छ में गधे भी जंगली देखे-सुने गये हैं, पर गाय के सम्बन्ध में ये शब्द नये और चौंकाने वाले हैं। कहीं हम ऐसे समाज की और तो नहीं बढ़ रहे हैं जिसमें भविष्य में हमारे वृद्ध माता-पिता भी ऐसे ही दस-बीस के झुण्ड में आवारा और निराश्रित होकर गाँव में जंगली जानवरों की तरह घूमते और अपना जीवन गुजारा करते नजर आवें और हम उन्हें देखकर इन्हीं शब्दों का प्रयोग करें जैसा कि आज इस गोवंश के लिये कर रहे हैं ? हमारे नैतिक मूल्यों में भारी गिरावट का ही संकेत है यह अन्यथा आप ६० वर्ष के बुजुर्ग को पूछकर देख लीजिये कि कहीं उन्होंने कभी सुना भी है कि कोई गाय बिन मालिक की और आवारा भी होती है ? हाँ, आवारा शब्द जरूर सुना है जिसका कि प्रयोग समाज में ऐसे लोगों के लिये साधारणतया किया जाता है जो गैरजिम्मेदार, अमर्यादित, स्वच्छंदकारी तथा निहायत चरित्रहीन होते हैं। गोमाता के लिये और इतने हल्के शब्द का प्रयोग। क्या कोई यह कहता है कि उसकी माँ आवारा है? अगर नहीं तो फिर गोमाता के लिये ऐसे शब्दों का प्रयोग क्यों ?

आए दिन समाचार पत्रों में पत्रकार बाजार में बैठे गोवंश का फोटो देकर लिख देते हैं- 'सड़कों पर आवारा पशुओं का आतंक।' गोवंश आवारा नहीं है, आवारा तो यह मनुष्य है जो उसने गाय के सारे अधिकारों का अपहरण कर लिया, तभी तो वो यहाँ आपकी लग्जरी कारों की टक्कर और आपके श्रीमुख से गालियें खाने के लिये बीच सड़क कड़ी धूप में बैठी उसके ग्वाले को जार-जार रो रही है।

आप बुजुर्गों को पूछ कर तो देखिये, अगर किसी की गाय कहीं खो जाती थी या किसी अन्य गाँव से आयी गायों के साथ चली जाती थी तो जब तक उसका पता नहीं लगता, उसका मालिक चैन से नींद नहीं ले पाता था। गायकी चिन्तामें उनका जीना कठिन हो जाता था। महिलाओं और बच्चों को हमने ऐसी स्थिति में बुरी तरहसे रोते हुए भी देखा है,जैसे उनका कोई परिजन राम कर गया हो।

ऐसी परिस्थिति जो है, उसके लोग कई कारण गिनायेंगे, जिसमें यह भी कहेंगे कि गाय के दूध की मात्रा कम होने से पोसाता (Economic) नहीं है। लेकिन ये सब तो गिनती बढ़ाने के लिये कारण हो सकते हैं, मुख्य कारण तो हमारी नैतिकता खत्म होना ही है। जहाँ भाई-बहन, बाप-बेटी, गुरु-शिष्य जैसे रिश्तों की पवित्रता छिन्न-भिन्न होती नजर आ रही हों, क्या नैतिक पतन के अलावा इसका कोई दूसरा कारण हो सकता है ? कुल मिलाकर गाय के सम्बन्ध में यहाँ यह बात है कि व्यक्ति ने उसकी महत्ता को अपनी बेवकूफी से नकार दिया है, क्योंकि उसकी नैतिकता गिर गयी है

तो अब सब कुछ उसी की श्रेणी के जो होंगे वो उन्हीं को पसंद करेगा। उसका मेल उन्हीं से हो सकता है। ऐसे में एक परम पवित्र प्राणी गोमाता से उसकी पटरी नहीं बैठ रही है, अब वह भैंस जैसी पूतना से माँ का रिश्ता जोड़ता नजर आ रहा है और अपनी परम हितैषी गोमाता की उपेक्षा कर उसे घर से बदर कर रहा है और उसे अब आवारा नजर आ रही है अपनी परम पूज्या गोमाता।

ऐसी परिस्थिति में गाँव-गाँव आपको निराश्रित गोवंश के झुण्ड किसानों के डण्डे खाते या किसान के खेतों में खड़ी फसलों को चौपट करते नजर आते हैं। यह बात तय है कि इसमें गाय का कोई दोष नहीं है और न ही कोई न्यायाधीश भी उनका दोष निकाल सकता है। क्योंकि हमारा कानून गोवंश पर या मनुष्य के अलावा अन्य प्राणियों पर लागू ही नहीं होता। वे उनके कानून से नियंत्रित हैं, जहाँ बिलकुल सीधा नियम है कि भूख और प्यास लगने पर धरती पर पड़ा कहीं भी जो घास-चारा और पानी है, वो उनका है। अगर वह किसी मनुष्य का है तो उसकी सुरक्षा की जिम्मेदारी उसी की है, उसे कोई मनुष्य के अलावा अन्य प्राणी खा लेता है तो वह बिलकुल निर्दोष है, उसका कतई कोई दोष नहीं है। इसलिये खेतों के बाड़ करने की जिम्मेदारी खेत मालिक की है। यदि खेत मालिक खेत के बाड़ नहीं करता है, उसमें गायें घुस जाती हैं और वह गायें के साथ मारपीट करता है तो वह दण्ड का पात्र है।

ऐसी स्थिति में जब आप गोवंश को न तो अपने घरों में रखना चाहते हो, न उनको खेत में घुसने देना चाहते हो और न उनको गाँव गोचर में खड़ा ही रहने देना चाहते हो तो फिर बताओ इस गोवंश को आप कहाँ भेजना चाहते हो ? ऐसे में यदि कसाई उनको ले जाये तो क्या बड़ी बात है। ऐसा मौका देखकर ही तो हमारे ही समाज में से कई लोग कसाईयों के दलाल बन गये हैं। कितने ही हिन्दू व्यापारी बन गये हैं जो ट्रकें भरकर सीधे कसाईखाने तक गोवंश को आसानी से पहुँचा देते हैं। कई हैं जो चरवाहों के वेश में ऐसे गोवंश को चराते-चराते कसाइयों तक पहुँचा देते हैं। उन पर वहम भी कौन करे ?

ऐसा गोवंश भी बहुत अधिक नहीं है। एक गाँव के सामने ३०-४० गायों की व्यवस्था करना कोई बड़ी बात भी नहीं है। लगभग हर गाँव में एक-दो तो ऐसे समर्थ व्यक्ति तो भगवत कृपा से होते ही हैं जो अकेले ही इतनी गायों की सेवा ले सकते हैं। बस बात है तो इस सेवा की शुरूआत कहाँ से और कौन करे ? एक बार कोई इस कार्य को प्रारम्भ कर आगे बढ़ता है तो साथ में जुड़ने वाले कई लोग तैयार होते हैं। अतः हम आपको अपने-अपने गाँव में ऐसे निराश्रित गोवंश की सेवा का कार्य आज से ही प्रारम्भ कर देना चाहिये।

अगर अपने गाँव में ऐसी गायों का प्रबन्ध करना है तो सबसे अच्छा तरीका है कहीं एक सार्वजनिक जगह देखकर वहाँ गायों को चारा डालना शुरू कर दें और वहाँ कुछ पानी की भी व्यवस्था कर दें। सप्ताहभर सेवा होती देखकर इसमें जो-जो अच्छे स्वभाव के लोग हैं वे सहयोग करना प्रारम्भ कर देंगे। अच्छे लोग इस कार्य से अपने आप जुड़ना शुरू हो जायेंगे। हमने ऐसा प्रयोग किया है, उसके बाद लिख रहे हैं। जहाँ हम रह रहे हैं, उस शहर में हमारे निवास के पास ही १५-२० गोवंश का एक झुण्ड रात को सड़क पर बैठा करता था। आते-जाते वाहनों से कई बार

टक्कर लगती, लोग उन्हें बार-बार उठा देते और कई बार मारपीट करते। इतना सब सहने के बाद भी खाने के लिये सड़े-गले कागज, पोलिथीन आदि और पीने के लिये गंदे नाले का भयंकर बदबूदार पानी।

एक दिन अचानक गोमाता ने ही प्रेरणा दी कि गोवंश यहाँ बहुत दुःखी हो रहा है, कुछ जितनी हो सके सेवा शुरू कर दो। बस एक-दो व्यक्तियों को साथ लिया और गोसेवा शुरू कर दी। आते-जाते लोग देखते और कुछ प्रतिक्रियाएँ करते, जो कि सभी सेवा के पक्ष में ही थी। सप्ताहभर हरा चारा डाला। उसके बाद एक व्यक्ति ने सिमेंट का एक फर्मा लाकर दिया, उसे उचित स्थान पर एक पीलू के वृक्ष के नीचे लगाकर हमारे घर से पाईप लगाकर पानी भर दिया गया। १५ दिन में कई लोगों के भाव जुड़ते गये। लोग आगे आकर सहयोग करने लग गये। आने वाली बरसात तक चारे की व्यवस्था हो चुकी है। गोवंश की संख्या बढ़कर ३२ हो गयी। जिसमें १० बछड़े व नंदी, ११ बछड़ियों, शेष ११ गायें हैं। सेवा शुरू हुए तीन माह हो चुके हैं। इन तीन माह में एक-दो वृद्ध गोमाताओं को छोड़कर शेष समस्त गोवंश स्वस्थ और हृष्ट-पुष्ट हो गया है। प्रतिदिन कोई न कोई गोभक्त हरा चारा डलवा देता है। कोई खेली में पानी भरवा देता है। हमारा कार्य केवल इन कार्यों की देख-रेख और गोबर डालना रह गया है और सेवा कार्य बहुत अच्छी प्रकार से चल रहा है। सज्जन लोग आते-जाते देखकर प्रसन्न होते हैं। इनमें से कई गायों के मालिक भी हैं, जो चोरी छिपे बस इतना ध्यान रखते हैं कि हमारी गाय कितने माह ब्याहने में और लगायेगी। किसी भी गाय के मालिक ने खुलेतौर पर वहाँ आकर चारा नहीं डलवाया। धिक्कार है ऐसे लोगों को और उनके धन को।

यह सब देखकर मुझे लगा कि प्रत्येक गाँव में २०-२५ गायें ही तो निराश्रित घूम रही है, यदि गाँव वाले सकारात्मक सोच के साथ यह सेवा कार्य शुरू करें तो गाँव का इसमें हित ही हित है। सबसे बड़ा कार्य यह होगा कि हम एक बहुत बड़े अपराध से बच जायेंगे। गायों को चोर-डाकू और अपराधियों की भाँति गाँव से निकाला देना, हाय ! राम ! राम ! न जाने हम बिना ही सोचे कितना बड़ा अपराध कर रहे हैं। दयावानों! मेरे देवताओं कुछ कर रहे हो तो उसको थोड़ा पहले विचारकरके तो करो! अरे प्रभु! आप अपने ही घरों में पले, बड़े हुए गायों और बछड़ों को कचरे की भाँति बाहर फेंक रहे हो। अरे भैया! हम कितना बड़ा अनर्थ करने जा रहे हैं ? इसका परिणाम क्या होगा, हमने सोचा भी है ? क्या इतने बड़े पाप का फल हम भुगने की क्षमता रखते हैं ? और फिर गायों का अपराध क्या है ? किस अपराध का दण्ड हम उन्हें देने जा रहे हैं ?

अभी की घटना आपको बतायें। रानीवाड़ा क्षेत्र के एक कस्बे में, आस-पास के ८-१० गाँवों की गायों को किसानों ने हाँककर एक बाड़े में बन्द कर दिया जहाँ न तो चारे का कोई उचित प्रबन्ध किया गया, न पानी का और न ही छाया का कोई प्रबन्ध किया गया। गायें हमारे गाँव में नहीं रहे, हमारी बला से भले ही इन्हें कसाई ले जाये ऐसे भाव है इन खेडूतों के। जबकि शास्त्र तो यह कहते हैं कि भूमिदार यदि गायें नहीं रखता है तो वह अपराधी है। गायों का पालन करने वाला ही खेत रखने का अधिकारी है। बिना गायों वाले किसान को भूमि जोतने का कोई अधिकार नहीं। अगर गो विहिन किसान खेती कर फसल को काम.....*शेष अगले अंक में*

परम श्रद्धेय गोऋषि श्रीस्वामीजी महाराज के मई माह के प्रवास का संक्षिप्त विवरणः-

उदयपुर (मेवाड़) में श्रीमद्भागवत कथा ।

गोसेवार्थ 1 से 7 मई, 2012 को प्रतिदिन दोपहर 3 से 7 बजे तक उदयपुर मेवाड़ में बालव्यास प. पूज्य गोवत्स श्रीराधाकृष्णजी महाराज की मधुर वाणी से राजस्थानी भाषा में ''श्रीमद् भागवत कथा'' का आयोजन हुआ। कथा में प.पूज्य गोवत्स श्रीबालव्यासजी महाराज ने भावपूर्ण ओजस्वी वाणी से गोसेवा-गोरक्षा पर प्रेरणादायक प्रसंगों पर विशेष प्रकाश डाला।

उदयपुर के प्रसिद्ध ओरियटल पैलेस रिसोर्ट, सुभाषनगर में आयोजन शुभारम्भ में 1 मई को विशाल कलश यात्रा, 4 मई को श्रीकृष्णजन्म उत्सव-नन्दोत्सव, 5 मई को श्री गोवर्धन पूजा-छप्पनभोग तथा 7 मई को श्रीमद्भागवत व्यासपीठ पूजन एवं महाप्रसाद आदि कार्यक्रम हुए।

गाय की सेवा सबसे बड़ा धर्म।

5 मई, 2012 को परम श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्रीदत्तशरणानन्दजी महाराज कथा में पध ारे। गोऋषि श्रीस्वामीजी महाराज का मेवाड़ के गोसेवक-गोभक्तों ने भावभरा उत्साह के साथ अभिनन्दन किया।

गोऋषि श्रीस्वामीजी महाराज ने आशीर्वचन देते हुए गोभक्त धर्मप्रेमी श्रोताओं को मेवाड़ की महान परम्पराओं का स्मरण करवाते हुए कहा कि गोमाता पर राष्ट्रव्यापी संकट आया हुआ है और गाय नहीं बचने पर न राष्ट्र बचेगा और न ही मानव जाति। अतः कटिबद्ध होकर गोसंरक्षण एवं गोसंवर्धन हेतु कार्य में यथासंभव तत्काल सभी का लगना ही वर्तमान का सबसे बड़ा धर्म है।

गोऋषि श्रीस्वामीजी महाराज ने सभी से परिवार सहित गोव्रति बनने, प्रतिदिन गोसेवा में प्रत्यक्ष स्वयं भाग लेने तथा गोग्रास निकालने की अपील करते हुए संकल्प करवाया।

गोसेवार्थ दिव्य एवं भव्य स्वरूप में नून में ''गोभागवत कथा व नानी बाई रो मायरो'' ।

4 से 10 मई, 2012 तक श्रीपथमेड़ा गोधाम महातीर्थ एवं परम श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्रीदत्तशरणानन्दजी महाराज की पावन प्रेरणा से नून (जालोर) के समस्त ग्रामवासीयों की ओर से गोसेवार्थ **''श्री गोभागवत कथा''** सहित विभिन्न कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

श्रीसुबेत्रा माताजी गोवर्धन गोशाला परिसर में 4 से 10 मई तक व्यासपीठाधीश प.पू. श्रीज्ञानानन्दजी महाराज के मुखारविन्द से **''श्री गोभागवत कथा''** प्रतिदिन प्रातः 9.30 से 12. 30 बजे तक हुई। 8 से 10 मई रात्रि 8 से 10 बजे तक परम गोवत्स पूज्य श्रीराधाकृष्णजी महाराज के श्रीमुख से मधुर राजस्थानी भाषा में **''नानी बाई रो मायरो''** का आयोजन हुआ। साथ ही संध्याकालीन समय में वृन्दावन के प्रसिद्ध कलाकारों द्वारा **'' गोचारण रासलीला''** का भी भावभरा सुन्दर मंचन हुआ।

सभी कार्यक्रमों में नून, बागरा, जालोर सहित दूर-दूर तक के गांवों-कस्बों के भक्त-भाविकों ने हजारों की संख्या में पहुँचकर गोसेवा, गोसत्संग और गोभक्ति भावरस से सरोबार कार्यक्रमों का आनन्द लिया।

गाय जगत की माता, वृषभ साक्षात धर्मः- गोऋषि श्रीस्वामीजी महाराज

9 मई को परम श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्रीदत्तशरणानन्दजी महाराज के पधारने पर समस्त नून ग्रामवासीयों के साथ-साथ बागरा, जालोर, सिरोही तक के गोभक्तों ने हजारों की संख्या में पहुँचकर दर्शन, आशीर्वचन एवं गोसेवा-गोरक्षा का संकल्प लिया।

गोऋषि श्रीस्वामीजी महाराज ने आशीर्वचन देते हुए कहा कि सम्पूर्ण गोवंश एक है तथा गोसेवा-गोरक्षा की दृष्टि से गाय और बैल समान पूजनीय है। गाय जगत की माता है, वहीं बैल साक्षात धर्म है। अतः घर-२ गोपालन हो और जो नवजात गोवंश पैदा हों, उन्हें मादा व नर दोनों को समान रूप से सेवा करते हुए उच्च नस्ल के रूप में तैयार करें। उन्होंने खेद जताया कि चहुँऔर नर गोवंश की उपेक्षा देखी जा रही है जबकि दूसरी तरफ अच्छे नन्दी (सांडो) की समाज में बहुतायात मांग बनी हुई है। पूज्यश्री ने फरमाया कि गोसेवा-गोरक्षा वैतरणी की भांति है, सच्चे हृदय से सेवक सेवा करे तो सभी प्रकार के साधन स्वतः ही आ जाते हैं।

गोऋषि श्रीस्वामीजी महाराज ने बताया कि गोसेवक के लोक व परलोक के समस्त मनोरथ स्वतः पूरे होते हैं। यह प्रत्यक्ष गोसेवा कर रहे कार्यकर्त्ताओं के जीवन में हम सभी देख एवं अनुभुत कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि गाय दूर्बल-निर्बल प्राणी नहीं होकर बल्कि पूरी सृष्टि की पोषक है परन्तु इस कलिकाल में गोमता का ऐसी स्थिति में होना उनके द्वारा मानव जाति को गोसेवा द्वारा कल्याण का अवसर प्रदान करना है।

''गोभागवत कथा'' में प.पू. श्रीज्ञानानन्दजी महाराज तथा ''नानी बाई रो मायरो'' में परम गोवत्स श्रीराधाकृष्णजी महाराज ने गोमहत्ता, गोउपादेयता एवं आवश्यकता के अनेकानेक प्रसंगों पर प्रकाश डालकर कई अवसरों पर श्रोताओं को भाव-विह्वल कर दिया।

विशेषः- नून में सम्पन्न हुए श्री गोभागवत कथा, नानी बाई का मायरा, रासलीला कार्यक्रमों का विशेष प्रसारण अर्न्तराष्ट्रीय धार्मिक-अध्यात्मिक ''संस्कार चैनल'' पर 10 जून से 16 जून, 2012 को प्रतिदिन प्रातः 10-30 बजे से दोपहर 2-00 तक होगा।

भीलवाड़ा में गोसेवार्थ ''नानी बाई रो मायरो'' अभूतपूर्व भव्यता-दिव्यता के साथ सम्पन्न।

10 मई, 2012 को प्रातः श्रीमनोरमा गोलोकतीर्थ, नन्दगांव से प्रस्थान कर परम श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्रीदत्तशरणानन्दजी महाराज के भीलवाड़ा पहुँचने पर भीलवाड़ा वासीयों ने भव्य अभिनन्दन के साथ आगवानी की। रात्रि 9 बजे श्रीस्वामीजी महाराज ने वरिष्ठ एवं प्रबुद्ध गोभक्तों के साथ गोसेवा-गोरक्षा विषय पर विस्तार से बैठक की। परम श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्रीदत्तशरणानन्दजी महाराज का लगातार चार दिन तक पावन सानिध्य पाकर भीलवाड़ावासी हजारों गोसेवक-गोभक्त नर-नारी एवं बच्चे स्वंय को धन्य-२ अनुभुत कर रहे थे।

गोभक्त परिवार, भीलवाड़ा द्वारा श्रीअग्रवाल उत्सव भवन के विशाल परिसर में आयोजित 11 से 13 मई तक तीन दिवसीय **''नानी बाई रो मायरो''** कार्यक्रम परम गोवत्स बालव्यास श्रीराधाकृष्णजी महाराज के मुखारविन्द से सम्पन्न हुआ। धार्मिक व अध्यात्मिक दृष्टि से भीलवाड़ा में यह गोसेवार्थ आयोजन हर दृष्टि से अभुतपूर्व रहा। क्षैत्र के सभी वर्गों व समाजों के भक्त-भाविकों ने तन-मन-धन से भाग लते हुए सेवा की। विशाल पंडाल का लगातार तीनों दिन विस्तार करना पड़ा। पूरे शहर में अद्भूत उत्साह, उमंग

के साथ गोसेवा का स्वर गुंजायमान था।

प्रतिदिन प्रातः 8.30 से 12.30 बजे तक प्रातः प्रभातफेरी में सैकड़ों गोसेवक भक्तिरसमय संगीत के साथ भाग लेते, ऐसा लग रहा था जैसे गोसेवारूपी भावरस में पूरा भीलवाड़ा मंत्रमुग्ध सा है। इसी प्रकार सांयकालीन कार्यक्रम भी रात्रि 7 बजे से 10 बजे तक प्रथम दिन **''गोरक्षा भगवन्न नाम संकीर्तन मण्डल, जयपुर''** द्वारा गोभजन संध्या, द्वितीय दिन मीरा भक्ति कथा तथा तीसरी रात्रि भारत माता की आरती राष्ट्रीय प्रवक्ता श्रीसत्यनारायण मौर्य की अगुवाई में हुई।

भीलवाड़ा के सम्पूर्ण कार्यक्रमों में परम श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्रीदत्तशरणानन्दजी महाराज का पावन सानिध्य बना रहा। प्रतिदिन प्रातःसांय गोऋषि श्रीस्वामीजी महाराज से कार्यकर्त्ताओं एवं भक्त-भाविकों को गोसेवी विषयों पर मंत्रणा, आशीर्वचन एवं अपनी गोरक्षा-गोसेवा सम्बन्धित जिज्ञासाओं के समाधान प्राप्त करने का सौभाग्य मिला। मेवाड़ के वयोवृद्ध गोभक्त संत प.पू. श्रीराजारामदासजी महाराज, शेखावाटी से गोरक्षा समिति के अध्यक्ष प.पू. श्रीदिनेशगिरीजी महाराज सहित अनेकानेक वरिष्ठ संतवृन्द तथा देश भर से कामधेनु परिवार, पथमेड़ा से जुड़े वरिष्ठ गोभक्तजन भीलवाड़ा पधारे।

गोऋषि श्रीस्वामीजी महाराज के विभिन्न समयों पर दिए आशीर्वचन-उद्बोधन में उन्होंने प्रतिदिन गोग्रास निकालने, प्रत्यक्ष गोसेवा में भाग लेने, पहली रोटी गोमाता को देने, अधिक मूल्य देकर भी गाय के ही दूध, दही, घृत का उपयोग करने, हर संभव घर, खेत, फार्म, फेक्ट्री में गाय रखने अथवा गोशालाओं में पल रहे निराश्रित गोवंश को गोद लेने, गोवंश के रक्षार्थ जनआन्दोलन में तन-मन-धन से सहयोग करने, पंचगव्य औषधियों के उपयोग करने, गोबर से उत्पादित अन्न, फल, सब्जियाँ आदि ही खरीदने, घायल-बीमार गोवंश की तत्काल सेवा करने, अपनी कमाई का दशांश गोसेवा में लगाने तथा पारिवारिक विवाहादि सभी शुभ अवसरों पर गोमाता के लिए गोग्रास सेवा राशि निकालने का सद्संकल्प लेने का अह्वान किया ।

गोऋषि श्रीस्वामीजी महाराज की पावन निश्रा में '' श्री गुजरात गोभक्ति महोत्सव '' में हजारों गोसेवक-गोभक्त पहुँचे।

18 से 20 मई, 2012 को परम श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्रीदत्तशरणानन्दजी महाराज के पावन सानिध्य में गोधाम पथमेड़ा द्वारा स्थापित-संचालित गुजरात की गोशालाओं में से प्रमुख श्रीराजाराम गोशाला, टेटोड़ा में आयोजित **''गुजरात गो-भक्ति महोत्सव-2012''** में पूज्यश्री के पावन सानिध्य का बनासंकाठा सहित सम्पूर्ण गुजरात के गोसेवकों-गोभक्तों को लाभ अर्जित हुआ।

गोऋषि श्रीस्वामीजी महाराज की पावन निश्रा में हुए इस कार्यक्रम के आयोजन श्रीराजाराम गोशाला, टेटोड़ा तथा संयोजकत्व गुजरात गोसेवा आयोग-गाँधीनगर ने किया। कार्यक्रम में गुजरात सहित देशभर से गोभक्त, गोसेवक, गोवैज्ञानिक, गोचिंतक, गोचिकित्सक और प्रबुद्ध विचारकजन पधारे। पूर्व केन्द्रीय मंत्री एवं सांसद गुजरात गोसेवा आयोग के अध्यक्ष डॉ. श्रीबल्लभभाई कथिरिया सहित अनेक वरिष्ठ जनप्रतिनिधि एवं प्रशासनिक अधिकारी भी लगातार कार्यक्रम में उपस्थित व पधारते रहे।

''श्रीगुजरात गोभक्ति महोत्सव'' में प्रतिदिन प्रातः 8 से 9 बजे गोपुष्टि महायज्ञ, 10 से 1 बजे दोपहर तक गोसंत सम्मेलन, सांय 5 से 7 बजे गोविज्ञान संगोष्ठियाँ तथा रात्रि 8 से 11 बजे गो-गोपाल भक्ति संगीत के आयोजन सम्पन्न हुए। सभी कार्यक्रमों में गोसेवी-गोभक्त जनमानस अपार उत्साह के साथ ऊमड़ता रहा। क्षैत्र के वरिष्ठजनों ने गोसेवा हेतु घास-चारा, चिकित्सा आदि में बढ़ चढ़कर सहयोग करते

हुए यजमान बनने का सौभाग्य प्राप्त किया।

18 मई को गुजरात प्रदेश ''गोशाला सम्मेलन तथा गोसंरक्षण संवर्धन संगोष्ठि'', 19 मई को ''गोपालक किसान सम्मेलन तथा गो-कृषि विज्ञान संगोष्ठि'' और 20 मई को ''गोसेवा संत सम्मेलन तथा पंचगव्य विनियोग संगोष्ठि'' सम्पन्न हुई। संगोष्ठियों में अनेक संतवृन्दों, विद्वानों एवं अधिकारियों ने विचार रखे तथा हजारों जनमानस ने भाग लिया।

राजस्थान व गुजरात गोमाता का घरः- गोऋषि श्रीस्वामीजी महाराज

परम श्रद्धेय गोऋषि श्रीस्वामीजी महाराज ने **''श्रीगुजरात गो-भक्ति महोत्सव''** में आशीर्वचन में कहा कि पूरे विश्व में भारतवर्ष और भारत में विशेष रूप से राजस्थान व गुजरात गोमाता का प्रमुख घर है। गुजरात की कांकरेज व गिर नस्लें विश्व भर में सुप्रसिद्ध नस्लें हैं, जिन्होंने मानव जाति व प्रकृति की सदैव अमूल्य सेवा की है। उन्होंने कहा कि गोमाता की रक्षा व सेवा आज की आवश्यकता मात्र इसलिए नहीं है कि गाय को बचाना है बल्कि सत्य यह है कि गाय नहीं बचेगी तो मानव जाति भी नहीं बचेगी। उन्होंने कहा कि चहुँऔर मन, भाव एवं शरीर से मानव और संपूर्ण प्रकृति रोगाणु नजर आ रही है, वो गाय की उपेक्षा का ही कारण है।

गोऋषि श्रीस्वामीजी महाराज ने कहा कि राष्ट्र के समस्त शुभचिंतक, मानवता के प्रहरी और समाज व राष्ट्र की सेवा में जूटे तत्व सबसे बड़ी प्राथमिकता गोरक्षा को समझें और आगे आवें। यदि हमने गाय को बचा लिया अर्थात गाय को जीवन में एवं राष्ट्र में स्थापित कर लिया तो समझलो सब समस्याओं का समाधान संभव हो जायेगा। यदि इसी प्रकार गाय की महत्ता, उपादेयता एवं आवश्यकता की उपेक्षा करते रहे तो समस्त प्रकार से किये जाने वाले समाज, मानव एवं राष्ट्र सेवा के प्रयास कभी फलीभूत नहीं हो सकते है।

धरती माँ को यूरिया- पेस्टीसाईज से बाँझ बनाना तथा गोमाता के स्थान पर विदेशी प्राणी को पालना महापाप :- गोऋषि श्रीस्वामीजी महाराज

28 मई, 2012 को परम श्रद्धेय स्वामी श्रीदत्तशरणानन्दजी महाराज बनासकांठा (गुजरात) के मानगढ़ में गोभक्त पूज्य श्रीछोगारामजी माली की मधुरवाणी से हो रही **''श्रीरामकथा''** में आशीर्वचन देने पधारे। उनका हजारों गोसेवकों-गोभक्तों ने हार्दिक अभिनन्दन किया।

गोऋषि श्रीस्वामीजी महाराज ने कहा कि धरती माँ के गर्भ को यूरिया, पेस्टीसाईज देकर हमने बाँझ बनाने एवं कैंसर से पीड़ित करने का महापाप किया है। वहीं गोमाता के स्थान पर उनके जैसा दिखाई देने वाले प्राणी जर्सी- हिलस्टन को पालकर गोमाता की घोर अवमानना की है। इन्हीं दो महापापों का कारण है कि सम्पूर्ण राष्ट्र की जनमानस समस्याओं से ग्रस्त और अस्वस्थता से बूरी तरह त्रस्त है। इस स्थिति से मुक्ति मिलना तभी सम्भव है यदि पुनः देशी गोवंश का घर-२ में पालन करते हुए एक-२ व्यक्ति के जीवन में पंचगव्य का प्रयोग शुरू हो जावें।

पालड़ी में श्रीभागवत कथा ज्ञानयज्ञ

परम श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्रीदत्तशरणानन्दजी महाराज 29 मई, 2012 को पालड़ी ग्राम में स्व.श्रीसांवताजी पुत्रश्री भलाजी जोशी की पुण्यस्मृति,मातृश्री श्रीमती धापूदेवी के सपरिवार चारोधाम यात्रा सम्पन्न करने एवं गंगा महाप्रसादी (चौराई) के उपलक्ष में आयोजित **''श्रीमद् भागवत कथाज्ञान यज्ञ''** के अवसर पर पधारे।

गोऋषि श्रीस्वामीजी महाराज ने कथा स्थल पर आशीर्वचन में मानवीय परम्पराओं-संस्कारों व मूल्यों के संरक्षण हेतु गोसेवा-गोरक्षा

को पहली आवश्यकता बताते हुए गोव्रत अपनाने की अपील की। व्यासपीठ से कथा रसस्वादन प.पू. श्रीज्ञानानन्दजी महाराज के मधुर वाणी से हो रहा है।

अहमदाबाद में पंचगव्य वितरण केन्द्र।

31 मई को गोऋषि श्रीस्वामीजी महाराज के करकमलों से गुजरात के कर्णावती (अहमदाबाद) महानगर में गोभक्तों द्वारा पंचगव्य जनजागृति अभियान के अन्तर्गत विशाल **''पंचगव्य वितरण केन्द्र''** का शुभारम्भ होगा। इस कार्यक्रम में प.पू. श्रीराधाकृष्णजी महाराज, गोधाम पथमेड़ा के महामंत्री श्रीश्रवणसिंहजी राव सहित अनेक वरिष्ठ गोसेवक कार्यकत्ताओं की उपस्थिति रहेगी।

20 से 24 जून 2012 को श्री मनोरमा गोलोक तीर्थ नन्दगावं में ''गो-वत्स पाठशाला ''।

श्रीमनोरमा गोलोक तीर्थ, नन्दगांव में पाँच दिवसीय ''गो-वत्स पाठशाला'' का आयोजन 20 से 24 जून, 2012 को हो रहा है। पाठशाला के दौरान गोसंरक्षण, गोपालन, गोसंवर्धन,पंचगव्यों के उत्पादन एवं विनियोग की पौराणिक एवं आधुनिक पद्धतियों के व्यवहारिक और बौद्धिक दोनों स्वरूपों पर आधारित दैनिक दिनचर्या रहेगी। साथ ही योग,व्यायम मेडीटेशन, गोसेवा कार्य, गोशालाओं का भ्रमण, सत्संग, विचार-विमर्श व संगोष्ठियों आदि का भी प्रतिदिन आयोजन होता रहेगा। देशभर से लगभग एक हजार युवा गोवत्स भाग लेगें।

5 दिन के इस शिविर में युवाओं के जीवन के लिए जरूरी सभी पाठ पढाए जाते हैं। जैसाकि आप सभी जानते हैं कि बालक अपनी माँ के पास रहकर जितना सिखता है, उतना अन्यत्र कहीं नहीं सिख पाता है और गोमाता तो अखिल विश्व की जननी है, अतः पथमेड़ा गोधाम एवं श्रीमनोरमा गोलोक तीर्थ, नन्दगावं की वात्सल्यमयी पावन गोभूमि का चयन सर्वोत्तम है। यहाँ का वातावरण, आहार, दिनचर्या व कार्यक्रम ये चार बातें युवाओं के जीवन को सात्विक बनाने का प्रयास करती, ऐसा अनुभूत हुआ है कि यहाँ के गोमय वातावरण, गोगव्य युक्त आहार, यहाँ की अनुशासन व स्फूर्तियुक्त दिनचर्या, भारतीय संस्कृति व गो महिमा का पग-पग पर परिचय कराते कार्यक्रम ये सभी बातें यहाँ आने वाले हर युवा के जीवन में सात्विक परिवर्तन की बाहार ला रही है।

''गो-वत्स पाठशाला'' के माध्यम से युवा बन्धु प्रत्यक्ष गोसेवा का लाभ लेते है। भारतीय संस्कृति के वे सभी पहलुओं जिन्हें आज का युवा अनदेखा कर रहा है, जैसेकि यज्ञ, हिन्दु धर्मशास्त्र, संध्यावन्दन, भारतीय परिवेश, पूजा-अनुष्ठान, शास्त्रीय संगीत आदि इन सभी को अत्यंत रोचक तरीके से युवाओं को समझाने का प्रयास विद्वान प्रवक्ताजनों एवं गोभक्त संतवृंदों द्वारा किया जाता है।

नन्दगांव में 23 मई को वरिष्ठ गोभक्तों-गोसेवकों की विशेष बैठक।

bl nkjku uUnxkao e 23 **जून को गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा के सभी ट्रस्टों के पदाधिकारीगण एवं वरिष्ठ गोभक्त-गोसेवक कार्यकर्त्ताओं की विशेष बैठक परम श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्रीदत्तशरणानन्दजी महाराज के पावन सानिध्य में होगी। बैठक में राष्ट्रव्यापी गोसेवा-गोरक्षा रचनात्मक महाभियान के अर्न्तगत चल रहे कार्यों का अवलोकन होगा तथा भावी योजनाओं पर विचार-विमर्श एवं निर्णय लिए जायेंगे। अतः सभी वरिष्ठ गोभक्तों-गोसेवकों से विनम्र निवेदन है कि इस अति आवश्यक बैठक में अवश्य भाग लेवें।**

गोशाला

साभारः गोशाला

(पंचखण्ड पीठाधीश्वर प. पू. आचार्य श्री धर्मेन्द्रजी महाराज)

(238)

कैसे भला भुला दी जाए
सन् छ्यासठ की वह ज्वाला
सात नवम्बर को दिल्ली में -
जब लौटा जलियाँवाला
शत-शत गोभक्तों के सिर जब
बिलवेदी की भेंट चढ़े
वीर सुतों की स्मृति मे विहल रोयी थी जब
गोशाला

(236)

गोदी में लेकर शिशुओं को
जिनने भरी बन्दिशाला
जिनने पतियों बन्धु सुतों को
बलि की भेंट चढा डाला
गोरक्षा आन्दोलन जिनके
बलिदानों का साक्षी हैं
अपनी वीर सुताओं को क्या भूल सकेगी
गोशाला?

(240)

कितनों ने अनशन -शया पर
अपना जीवन दे डाला
कितनों ने अपने शरीर का
शोणित मांस सुखा डाला
कितने बींधे गये गोलियों -
से कितने बलिदान हुए
केन्तु आज भी वधिकों के घर बँधी हुई है
गोशाला

गो साहित्य सृजन हेतु विशेष निवेदनः- गो-लोकदेवताओं एवं अनुकरणीय गोभक्तों-गोसेवकों की जानकारी भेजें।

समस्त गोसेवक-गोभक्त पाठकों से विनम्र निवेदन है कि आपके जिला, तहसील, पंचायत एवं गांव क्षैत्र में गोसेवा-गोरक्षा से जुड़े श्रेष्ठ एवं प्रेरणादायी गोरक्षक लोक देवताओं तथा देवात्माओं जैसे कि झूंझार, भोमीया आदि की पूरी गोसेवार्थ-गोरक्षार्थ जीवन चरित्र (जीवनी) एवं चित्र आदि सामग्री भेजें।

राजस्थान सहित भारतवर्ष की पावन धरा गोसेवा एवं गोभक्ति भाव से सदैव ओत-प्रोत रही हैं। सर्वत्र ऐसे श्रेष्ठ व्यक्तित्व हुए हैं, जिन्होंने अपने जीवन को गोसेवा-गोरक्षा में सम्पूर्ण रूपसे न्यौछावर कर दिया। समाज के लिये ऐसे प्रेरणादायी गोसेवकों-गोरक्षकों की सम्पूर्ण जानकारी देश के लाखों-करोड़ों गोप्रेमियों को प्रमाणिक रूप से संग्रहित होकर उपलब्ध हो सके, ऐसा प्रयास है। इस हेतु शीघ्र ही समग्र साहित्य जिसमें गो-लोक देवताओं, गो-परम्पराओं एवं गोसेवा व गोरक्षा सम्बन्धित समस्त विशेष ऐतिहासिक एवं वर्तमान के व्यक्तित्वों पर साहित्य सृजन किया जा रहा है।

उपरोक्त सम्बन्ध में शीघ्रातिशीघ्र पत्र, ईमेल या फेक्स द्वारा प्रमाणिक जानकारी प्रेषित करें। अपने आस-पास से और स्वयं के जीवन में गोरक्षा-गोसेवा सबन्धित श्रेष्ठ अनुभव एवं चमत्कारिक अनुभुतियाँ को भी भेजें। सम्पर्कः- 9414154706, टेली. फेक्स - 02979 -287122 ई मेल. k.k.p.pathmeda@gmail.com

मासिक पत्रिका ''कामधेनु-कल्याण'' स्वामी ''श्री गोपाल गोवर्धन गोशाला'' के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक स्वामी ज्ञानानन्द द्वारा सुभद्रा प्रिंटिंग प्रेस, विश्नोई धर्मशाला के पास, साँचौर (जालोर) से मुद्रित करवाकर ''श्री गोपाल गोवर्धन गोशाला'' पथमेड़ा, पोस्ट-हाड़ेतर, तहसील-सांचौर, जिला-जालोर (राजस्थान) से प्रकाशित।

श्रीगोधाम पथमेड़ा द्वारा स्थापित, संचालित एवं प्रेरित गोशाला आश्रमों में संरक्षित गोवंश की संख्या

(1.)वृद्ध तथा कमजोर गायें - 37481 (2.) बीमार एवं विकलांग गायें -11416 (3.)नाकार एवं कमजोर नंदी 10122
(4.) बीमार एवं विकलांग नंदी - 11195 (5.) छोटे वृषभ - 9646 (6.) स्वस्थ गायें, बैल एवं नंदी - 18967
(7.) छोटे बड़े बछड़े-बछड़ियाँ - 23633 तथा , वर्तमान में सभी शाखाओं में कुल गोवंश की संख्याः-122450 है।

विशेष नोटः- उपरोक्त लगभग १ लाख से अधिक अनाश्रित-निराश्रित गोवंश के अतिरिक्त पिछले वर्षों में अकाल से पीड़ित लाखों निराश्रित गोवंश की भी प्रदेश के विभिन्न भागों में आपात गोसंरक्षण केन्द्र खोलकर सेवा-सुश्रुषा जारी रही।

बीते वर्ष अच्छे मानसून के चलते संतवृंदों के आह्वान पर राज्यभर में शिविरों व गोशालाओं से स्वस्थ, गर्भस्थ एवं दुधारू गोवंश को सीधे किसानों को बड़ी संख्या में वितरित भी किया गया। परन्तु वर्तमान में फिर से एक बार अकाल वर्षों की ही भाँति घास-चारा की मँहगाई एवं अनुपलब्धता का सामना पूरे प्रदेश में तथा विशेषकर गोधाम पथमेड़ा संचालित गोशालाओं को करना पड़ रहा है। अतः समय से पूर्व ही अकाल जैसी हो चुकी परिस्थितियों से विवश गोपालक अनुपयोगी गोवंश को निराश्रित छोड़ रहे हैं। फलतः गोशालाओं में लगातार गोवंश बढ़ता जा रहा है और भूख-प्यास एवं कसाईयों के क्रूर हाथों से बचाने का कार्य भी प्रदेशभर में युद्ध स्तर पर जारी रखना आवश्यक है। जबकि पिछले दो वर्ष से सरकार से किसी भी प्रकार का गोशालाओं को अनुदान व सहयोग नहीं मिल रहा है। अतः विनम्र आग्रह है कि समस्त गोभक्त-गोसेवक तत्काल अधिकाधिक सहयोग के साथ आगे आवें।

-: कार्यालय एवं कार्यकत्ताओं के सम्पर्क सूत्र :-

केन्द्रीय कार्यालय पथमेड़ा (02979) 287102,09 फैक्स 287122 मो. 7742093168, 9414131008, 9413373168, 9414152163
श्री मनोरमा गोलोक महातीर्थ, नंदगांव 9460717101, टे.फै. 02975-287343, 7742093200, 8003392291
दक्षिणांचल कार्या. बैंगलोर 08022343108 9449052168, 09829101008,09483520101
पश्चिमांचल मुख्यालय मुम्बई 02266393598,9702041008, 9969465325,9920871008
भायन्दर 9819772061,9029519779, 9324525247,9920871008
पूना 9372220347,9326960169,9029519779,9920871008
गोवा 7709587648, 9029519779, 9920871008
सूरत 9825130640, 9909914721, 9374538576, 9825572768, 9426106315, 0261.2369777
वापी 9427127906, 0260-2427475
चैन्नई 9884173998,9952077188,944057448,9445165901,9380570040
हैदराबाद 9030909090, 9849011776
अहमदाबाद 9426008540,9427320969,9824444049,9925019721,9374541460(079)25320652,
पंजाब 9814036249, 9417155533, 9815468646, 9417380950,9417601223
दिल्ली 9811284207, 9312227141, 9811985292, 09313550444, 9810027501
कोलकत्ता 9903016181, 9339355679
जोधपुर 9414145448,9414136210, 9414849721, 9929512000
अंकलेश्वर 9909946972, 9427101391,9825323694
जयपुर 0141-2299090,9929231144,9829067010, 9001000300, 9413369945
हरियाणा 9416050318, 9812019003,9812307929, 9829598216
रायपुर (छ.) 9425515915, 0771.2228068
भीलवाड़ा 9829045270, 9414113284,9413357589
बालोतरा 02988-223873,9413503100, 9460889930
बनासकांठा 9426408451,9979565700,9898869898,9427044445,9924941000
बाड़मेर 9413308582, 9414106528, 9414106331, 9928263311

अधिकाधिक गोभक्त मासिक ''कामधेनु-कल्याण'' के 10 वर्षीय आजीवन सदस्य बने। सदस्यता राशि 1100 रूपये का ड्राफ्ट ''कामधेनु प्रकाशन समिति'' के नाम से सम्पादकीय पते पर अथवा बी.ओ.बी शाखा सांचोर में ऑनलाईन खाता संख्या 29450100000326 में भेंजें।

RNI NO. RAJHIN/06/17167 POST REGD NO.RJ/SRO/9638/2012-2014

गोवत्स पाठशाला- २०१२

दिनांक 20 से 24 जून, 2012

आयोजन स्थल

मनोरमा गोलोक तीर्थ, नन्दगांव
केसुआ, तह. रेवदर जि. सिरोही (राज.)

Contact Namber:- 9314702262, 09920871008 Email:- g.pathmeda@gmail.com

-: सहयोग के प्रकार:-

1. बछड़ा - बछड़ी दत्तक लेकर प्रति बछड़ा प्रतिवर्ष- 7200/- रू.
2. गाय दत्तक लेकर प्रति गाय प्रतिवर्ष - 11,000/- रू.
3. हरा घास-चारा की एक गाड़ी - 30,000/- रू.
4. भू-दान देकर प्रति एक बीघा - 50,000/- रू.
5. सूखे घास की एक गाड़ी - 50,000/- रू.
6. बीमार गोवंश की दवाईयाँ प्रतिमाह - 2,10,400/- रू.
7. पौष्टिक आहार की एक गाड़ी - 1,95,400/- रू.
8. गुड़ की एक गाड़ी - 3,50,000/- रू.
9. एक दिन का घास चारा हरा एवं सूखा (40 गाड़ी) - 18,00,000/- रू.
10. तालाब/ट्यूबेल, गोगृह/ग्वाल गृह, गो चारा संग्रालय आदि में भी आप सहयोग कर सकते हैं।
11. अपने परिवार में जन्मादि उत्सव, व्रत-उपवास के दिन की बचत एवं अपने प्रतिष्ठान की आय में से सामर्थ्य, क्षमता एवं इच्छानुसार इलेक्ट्रॉनिक क्लीयरेंस स्कीम (ECS) के सदस्य बनकर सहयोग करें।

सहयोग को आप सीधे ही निम्न में से किसी भी बैंक में ऑन लाईन जमा करवा सकते है।

Account Name
Shree Gopal Govardhan Goshala, Pathmeda

Bank's Name	: Account No
बैंक ऑफ बड़ौदा Bank of Baroda India's International Bank	29450100007739
भारतीय स्टेट बैंक State Bank of India With you- all the way Pure Banking. Nothing else.	31187795707
स्टेट बैंक ऑफ बीकानेर एण्ड जयपुर State Bank of Bikaner and Jaipur The Bank with a vision	51055523971